...ात बाजार में मंदा

...र्च (एनएनएस) । लोहा और इस्पात के ...कुछ समय से मंदे का रूख चल रहा है । ...ारण व्यापारियों ने व्यापार में पैसा लगाने ...ी है । उठाव सुस्त होने से बाजारों का ...ना आ है । इससे कच्चे माल (इंगट) ...४७०० रुपए पर आ गया ।

...जियाबाद और सोनीपत में बिजली कटौती ...ली में इंगट ४८०० रुपए तक पहुंच गया ...वाली मिलों ने सरिए के भाव १०० रु. ...लिंकिंग धन की तंगी और मूल्यवृद्धि के ...हो गया । इससे सरिए के भाव फिर से ...मीटिक टन टूट गए । इसमें टेस्टेड सरिया ...कएल टॉर के नाम उल्लेखनीय है । इस ...गाई ८ एमएम ६५०० रु. १० एमएम ...१२ से २५ एमएम ६२५० रुपए प्रति ...समेत बेच रहे हैं ।

लोकसभा में बिजली

राज्यों के बिजली बोर्डों के कामकाज की आलोचना

नई दिल्ली, २४ मार्च (वार्ता, भाषा) । लोकसभा में राज्य के बिजली बोर्डों के कामकाज की कड़ी आलोचना की गई । सदस्यों ने ऊर्जा मंत्रालय की अनुदान मांगों पर चर्चा में भाग लेते हुए कहा कि कुप्रबंध के कारण ही बिजली बोर्ड इतने भारी घाटे में चल रहे हैं ।

इंका के भरत सिंह ने बिजली विभाग में भर्ती पर लगी रोक हटाने का अनुरोध किया । उन्होंने कहा कि कर्मचारियों की कमी के कारण ही उपभोक्ता की परेशानियां दूर नहीं हो पा रही हैं । अजीत विश्वास ने कहा कि बिजली संप्रेषण में हो रही हानि बढ़कर २१ प्रतिशत हो गई है । उन्होंने कहा इसके लिए प्रबंध दोषी हैं । इंका के जी एस बसवराज का कहना था कि सुपर ताप बिजली घरों की स्थापना को तरहीज दी जानी चाहिए । उन्होंने कर्नाटक में एक सुपर ताप बिजली घर लगाने की मांग की ।

बिजली: ऊर्जा राज्यमंत्री सुशीला रोहतगी ने बताया कि १९८९-९० तक देश में १४३७ करोड़ यूनिट से ज्यादा बिजली की कमी होने का अनुमान है । उन्होंने बताया कि बारहवें विद्युत सर्वे के अनुसार १९८९-९० के अंत तक बिजली की आवश्यकता २६९३७ करोड़ यूनिट ज्यादा होगी । जबकि उत्पादन २५५०० करोड़ यूनिट ही हो सकेगा ।

पंपसेट: बिजली राज्य मंत्री श्रीमती सुशीला रोहतगी ने बताया कि ग्राम विद्युतीकरण निगम ने आठ लाख पंपसेटों का सुधार करके ऊर्जा के संरक्षण के लिए निर्देशन परियोजना तैयार की है । इस सुधार के बाद हर साल लगभग ६०० मिलियन यूनिट बिजली की बचत होने की उम्मीद है । इस पर करीब १२० करोड़ का खर्चा आएगा ।

प्रस्ताव में कल्पना की गई है कि ४० करोड़ रुपए राज्य बिजली बोर्डों को अनुदान के रूप में दिए जाएं और शेष

...यंत्र लगाने का प्रस्ताव

...ी में तकनीकी खामियां हैं । शेष नौ दस ...ी गड़बड़ियां रहने से वे काम नहीं करते

तूतीकोरन में पवन क्षेत्र लगाया जा चुका है । ऐसे ही क्षेत्र दूसरी जगह लगाए जाएंगे । उन्होंने कहा कि पहाड़ी क्षेत्रों में ...

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Sarayu Trust

सहकारी बैंकों का बेजा
स्तेमाल न हो'

नई दिल्ली, २४ मार्च (प्रेट्र) । कृषि राज्यमंत्री योगेंद्र
वाना ने सहकारिता से जुड़े लोगों से अपील की कि वे
निजी परिवारों या सहकारी बैंकों को सहकारी समितियों
वित्तीय साधनों के इस्तेमाल की इजाजत नहीं दें । वे
ी दिल्ली सहकारी कांग्रेस का उद्घाटन कर रहे थे ।
श्री भकवाना ने सलाह दी कि वे विश्वास और समर्पण से
करें । और यह सुनिश्चित करें कि इन संसाधनों का
ाली सहकारिता के मुख्य उद्देश्य-गरीबी मिटाने में-ही

उन्होंने कहा कि एक बार सहकारी बैंक के कब्जे में आते
नका सुपरवीजन रिजर्व बैंक के हाथ में आ जाता है ।
र बैंक कानूनों के तहत गरीबों को पूरा फायदा नहीं मिल
। उन्होंने आरोप लगाया कि महाराष्ट्र में चीनी समितियों
संसाधनों पर कुछ परिवारों का एकाधिकार है । उन्होंने
कि रिजर्व बैंक के नियमों के तहत सहकारी बैंक के
का निदेशक तीन साल की दो अवधियों से ज्यादा
ने पद पर नहीं रह सकता भले ही वह बैंक का
ापक सदस्य हो ।

उन्होंने कहा कि इसके लिए एक रास्ता है—बैंक में
हकार बोर्ड का । एक संस्थापक सदस्य बोर्ड का

चीनी उद्योग के राष्ट्रीयकरण की

नई दिल्ली, २४ मार्च (वार्ता) । लोकसभा में देश के चीनी उद्योग के राष्ट्रीयकरण की मांग की गई । इंका के वलाल पेरुमान ने विशेष उल्लेख में कहा कि इस उद्योग के बारे में भार्गव समिति ने राष्ट्रीयकरण की सिफारिश की थी । पर सरकार उस पर कोई कार्रवाई नहीं कर रही है ।

खाद्य और नागरिक आपूर्ति मंत्री एचकेएल भगत ने लोकसभा में बताया कि पिछले तीन मौसमों में कुल एक करोड़ ९० लाख ६३ हजार टन चीनी पैदा हुई । उन्होंने गुरदास कामत को बताया कि चीनी की पैदावार में क्रम से बढ़ातरी हुई है । हालांकि गन्ने की खेत के अधीन क्षेत्र में कमी आ गई है ।

श्री भगत ने बताया कि १९८३-८४ में लगभग ३१ लाख हेक्टेयर क्षेत्र में गन्ने की खेती हुई । और करीब ५९ लाख टन चीनी का उत्पादन हुआ । १९८५-८६ में यह क्षेत्र घटकर लगभग २८ लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया । लेकिन उत्पादन बढ़कर ७० लाख टन हो गया ।

श्री भगत ने कहा कि देश में चीनी का उत्पादन बढ़ाने के लिए सरकार कई उपाय कर रही है । इसके तहत गन्ने का सरकारी खरीद मूल्य १९८४-८५ के साढ़े आठ प्रतिशत की रिकवरी पर १४ रुपए प्रति क्विंटल से बढ़ाकर १९८७-८८ का अनुपात बढ़ाकर कुल उत्पादन का पचास प्र
दिया गया है ।

श्री भगत ने बताया कि चीनी उद्योग की
अनुसार १९८७-८८ में लगभग ८९ लाख
१९८८-८९ में लगभग ९४ लाख टन चीनी
होगी । पर यह अंदाज लगाना भी संभव नहीं
अवधि में उत्पादन कितना होगा ।

श्री भगत ने एक दूसरे सवाल के जवाब में
३२२ चीनी मिलों ने अक्तूबर १९८२ से अक्तू
तक बफर स्टाक बनाया । उसके रख रखाव
सरकारी सहायता की मांग की । अब तक इस
करोड़ ३० लाख रुपए मंजूर किए गए हैं
बफर स्टाक रखने के लिए ब्याज, भंडारण और
पर दी गई ।

उप्र में पांच घं

नई दिल्ली, २४ मार्च (भाषा, प्रेट्र, यून्यू) । पैट्रो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Sarayu Trust

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

भगवान महावीर स्वामी

जैन धर्म भारतवर्ष का एक प्रसिद्ध धर्म है। इस जैन धर्म को चलाने वाले भगवान महावीर स्वामी हैं।

महावीर स्वामी का जन्म विहार प्रान्त के वैशाली नगर के राजघराने में हुआ था। इनके पिता राजा सिद्धार्थ और माता महारानी त्रिशला थीं। इनके जन्म के बाद राजा सिद्धार्थ का प्रभाव बढ़ने लगा था। अतः उन्होंने बालक का नाम 'वर्द्धमान' रखा था। आगे चलकर वे 'महावीर' के नाम से प्रसिद्ध हुए। इसका भी कारण था। जब वर्द्धमान छोटा ही था, तभी वह एक दिन एक भयंकर सर्प को पकड़ कर दूर छोड़ आया था। इसी प्रकार एक दिन उसने एक मदमस्त हाथी को वश में कर लिया था। इन घटनाओं के बाद वह 'महावीर' बन गया।

महावीर स्वामी के मन में बचपन से ही वैराग्य की भावना विद्यमान थी। संसार के सुखों में उनका मन नहीं लगता था। जब वे दुःखी मनुष्यों को देखते थे, तब उन्हें बहुत दुःख होता था। उन्होंने निश्चय किया कि कोई ऐसा मार्ग ढूंढना चाहिये, जिससे मनुष्य सुखी और शान्त बन सके। इसी विचार से एक दिन महावीर स्वामी घर छोड़कर वन में चले गए।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

घर छोड़ने के बाद महावीर स्वामी कुछ दिन तक इधर-उधर भटकते रहे। अन्त में उन्होंने तपस्या करने का निश्चय किया। १२ वर्ष तक उन्होंने घोर तपस्या की। तपस्या से उनके मन को शान्ति मिली। उन्हें ऐसा मार्ग मिल गया, जिससे मानव का कल्याण हो।

जब भगवान महावीर को ज्ञान प्राप्त हो गया, तब उन्होंने सारे देश में घूमकर अपने सिद्धान्तों का प्रचार किया। भगवान महावीर के सिद्धान्त 'जैन धर्म' के नाम से प्रसिद्ध हैं।

जैन धर्म की मुख्य शिक्षाएँ ये हैं—

(क) हिंसा नहीं करनी चाहिए। किसी के मन को दुखाना भी हिंसा है।

(ख) सदा सत्य बोलना चाहिए।

(ग) चोरी नहीं करनी चाहिए।

(ग) अपनी आवश्यकता से अधिक चीजें जमा करना बुरा है।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

गुरु नानक देव

हमारे देश में अनेक सन्त और महात्मा पैदा हुए हैं, जिन्होंने मानव के कल्याण के लिए सुन्दर उपदेश दिए हैं। ऐसे सन्तों में गुरु नानक देव भी एक हैं। गुरु नानकदेव ने सिख धर्म का प्रारम्भ किया था।

गुरु नानक देव का जन्म लाहौर के समीप तलवंडी नामक गाँव में हुआ था। अब इस स्थान का नाम 'ननकाना साहब' है और पाकिस्तान में है। भारतवर्ष से सैकड़ों सिख प्रतिवर्ष 'ननकाना साहब' की यात्रा करने जाते हैं।

नानक देव बचपन से ही ईश्वर भक्त थे। उनका मन संसार के कार्यों में नहीं लगता था। उन्हें संसार के सुख अच्छे नहीं लगते थे। जब उन्हें पाठशाला में पढ़ने के लिए भेजा गया, तब भी उन्होंने अध्यापक से 'ईश्वर का नाम' पढ़ाने को ही कहा।

जब नानकदेव ने पढ़ने में रुचि नहीं दिखाई तब उन्हें गौएँ-भैंसें चराने का काम सौंपा गया। इस कार्य में भी उनका मन नहीं लगा। पशु खेतों में घुस जाते और वे ईश्वर-भजन करते रहते। इसके बाद नानक को व्यापार में डाला गया। एक दिन उन्होंने व्यापार

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

के लिए दिए हुए रुपये साधु-सन्तों की सेवा में खर्च कर दिए ।

१६ वर्ष की अवस्था में नानकदेव नौकरी करने लगे । यहाँ भी वे अपना वेतन गरीबों में बाँट देते थे । इतना ही नहीं वे, सरकारी दूकान का अनाज आदि भी गरीबों को दे देते थे । १८ वर्ष की आयु में नानक देव की शादी हुई । उनके दो पुत्र भी हुए । किन्तु नौकरी और गृहस्थी में उनका मन अधिक दिन तक नहीं लगा । अन्त में वे जनता को धर्म का सच्चा रूप बताने के लिए घरबार छोड़कर चल पड़े ।

धीरे-धीरे नानक देव के सिद्धान्तों का प्रचार होने लगा और वे एक सन्त के रूप में प्रसिद्ध हुए । गुरु नानकदेव अपने धर्म का प्रचार करने के लिए ईरान, अरब आदि देशों में भी गए ।

गुरु नानक देव ने सदा पवित्र आचरण का उपदेश दिया । उनका कहना था कि जो कार्य हमें बुरा लगता है, वह दूसरों के लिए भी नहीं करना चाहिये । गुरु नानक देव के उपदेश 'गुरु ग्रन्थ साहब' नामक ग्रन्थ में लिखे गए हैं । यह ग्रन्थ सिखों का धर्म-ग्रन्थ है ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

महाराणा प्रताप

महाराणा प्रताप का जन्म १ मई, सन् १५४० ई० को चित्तौड़ के राजघराने में हुआ। इनके पिता का नाम उदयसिंह और दादा का नाम महाराणा सांगा (संग्राम सिंह) था। इनके पिता और दादा बड़े ही योद्धा और स्वाभिमानी थे। अपने पिता और दादा का प्रभाव प्रताप पर पड़ा। सन् १५७२ ई० में महाराणा प्रताप उदयपुर के सिंहासन पर बैठे।

वह समय मुगल सम्राट् अकबर का था। अकबर बड़ा ही नीति-कुशल था। उसने बहुत से हिन्दू राजाओं को लोभ देकर अपने अधीन कर लिया था। किन्तु महाराणा प्रताप ने अकबर की अधीनता स्वीकार न की। तभी से अकबर महाराणा प्रताप की शक्ति को कुचलने के उपाय सोचने लगा।

महाराणा प्रताप अकबर के चंगुल से चित्तौड़ को स्वतन्त्र करना चाहते थे। उन्होंने शपथ खाई कि जब तक चित्तौड़ को स्वतन्त्र न करा लूँगा, तब तक भूमि पर ही सोया करूँगा, पत्तों पर भोजन करूँगा और मूँछें ऊपर नहीं चढ़ाऊँगा।

अकबर ने अपने सेनापति राजा मानसिंह को एक बहुत बड़ी सेना के साथ महाराणा प्रताप को दबाने के

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

लिए भेजा। सन् १५७६ ई० में हल्दीघाटी के मैदान में घोर युद्ध हुआ। महाराणा प्रताप ने बड़ी वीरता के साथ युद्ध किया, किन्तु अकबर की विशाल सेना के सामने न टिक सके और जंगलों में जा छिपे।

महाराणा प्रताप लगभग २० वर्ष तक जंगलों में मारे-मारे फिरते रहे। इस बीच उन्हें बहुत-सी विपत्तियाँ झेलनी पड़ीं। उनके बच्चों को जंगली फल-फूलों पर गुजारा करना पड़ा, किन्तु इस राजपूत ने धैर्य नहीं छोड़ा।

एक बार भामाशाह ने अपनी सारी सम्पत्ति इनके चरणों में लाकर रख दी। भामाशाह का धन पाकर महाराणा प्रताप का उत्साह बढ़ गया। उन्होंने फिर एक बार अकबर से युद्ध करने की ठान ली और सेना तैयार करने में जुट गये।

महाराणा प्रताप ने अपनी शक्तिशाली सेना से अपने खोए किलों पर फिर से अधिकार कर लिया। अब केवल चित्तौड़ को जीतना बाकी था। दुर्भाग्यवश तभी सन् १५९७ ई० में ५७ वर्ष की आयु में इनकी मृत्यु हो गई।

महाराणा प्रताप राजपूतों में सबसे बड़े देशभक्त और भारत माँ के सच्चे सपूत थे।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

छत्रपति शिवाजी

शिवाजी का जन्म १० अप्रैल सन् १६२७ ई० को शिवनेरी के दुर्ग में हुआ था। उनकी माता का नाम जीजाबाई और पिता का नाम शाहजी था। शाहजी बीजापुर के शासक के दीवान थे।

शिवाजी की शिक्षा-दीक्षा माता जीजाबाई की देख-रेख में हुई। माता ने उनके मन में हिन्दुत्व का भाव कूट-कूट कर भर दिया। शिवाजी बहुत वीर थे। उन्होंने युद्ध-विद्या भी सीखी। वे मुसलमानों के शासन को समाप्त करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने मराठा जाति को संगठित कर सुसंगठित सेना भी तैयार कर ली थी।

शिवाजी ने सर्वप्रथम आक्रमण बीजापुर रियासत के तोरण नामक दुर्ग पर किया। तोरण को जीत लेने के बाद उन्होंने रायगढ़, पुरन्दर और राजगढ़ के किलों को भी जीता।

बीजापुर के बादशाह ने एक बड़ी सेना लेकर सेनापति अफ़जल खाँ को शिवाजी पर आक्रमण करने के लिए भेजा। शिवाजी ने अपनी बुद्धि और वीरता से उसे हरा दिया।

उस समय दिल्ली का बादशाह औरंजेब था। वह

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

हिन्दुओं को बहुत सताता था। इसलिये शिवाजी ने उससे भी युद्ध छेड़ दिया। औरंगजेब ने अपने मामा शाइस्ताखाँ को उधर भेजा। शाइस्ताखाँ स्वयं तो बड़ी कठिनाई से बच गया, किन्तु उसका पुत्र मारा गया।

एक बार औरंगजेब ने धोखे से शिवाजी को कैद कर लिया था, परन्तु वे फलों के टोकरे में छिपकर भाग निकले।

अब शिवाजी यवनों के कट्टर शत्रु बन गए। उन्होंने पुनः यवन-किलों पर आक्रमण कर उन्हें हस्त-गत करना प्रारम्भ कर दिया। ६ जून, १६४७ को रायगढ़ के किले में शिवाजी का राज्याभिषेक हुआ। इसके बाद उन्होंने मुसलमानों के अनेक किलों को जीत कर कर्नाटक तक बढ़ाया।

५ अप्रैल १६९० को इस वीर पुरुष की मृत्यु हो गई।

शिवाजी का नाम भारत के इतिहास में अमर है। वे हिन्दू धर्म के रक्षक हैं। शिवाजी सदा गौ, ब्राह्मण और स्त्रियों का सम्मान करते थे।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Sarayu Trust

आदर्श महापुरुष : महात्मा गाँधी

भारत को स्वतन्त्र कराने में महात्मा गाँधी जी का बहुत बड़ा हाथ था। इसीलिए भारतवासी इन्हें आदर से 'बापू' कहते हैं। बापू का पूरा नाम मोहनदास कर्मचन्द गांधी है।

महात्मा गाँधी जी का जन्म २ अक्तूबर, सन् १८६९ में गुजरात प्रान्त के पोरबन्दर नामक स्थान में हुआ था। इनके पिता राजकोट रियासत के दीवान थे। गाँधीजी की प्रारम्भिक शिक्षा पोरबन्दर में हुई। मैट्रिक की परीक्षा पास करने के बाद वे वकालत की शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैंड गए।

गाँधी जी इंग्लैंड से वकालत पास करके भारत लौटे। भारत में उनकी वकालत न चली। तभी उन्हें एक मुकदमा लड़ने के लिए अफ्रीका जाना पड़ा। वहाँ उन्होंने देखा कि वहाँ के गोरे शासक काले लोगों के साथ बुरा व्यवहार करते हैं। इसी कारण गाँधी जी को भी कई बार अपमान सहना पड़ा। एक बार वे गाड़ी के फर्स्ट क्लास में यात्रा कर रहे थे। कुछ गोरों ने उन्हें घसीट कर गाड़ी से बाहर उतार दिया।

गांधी जी को काले-गोरे का भेद बहुत बुरा लगा। उन्होंने इस भेद-भाव को समाप्त कराने के लिए

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust
आन्दोलन शुरू कर दिया। गांधी जी के सत्याग्रह आन्दोलन के सामने गोरे शासकों को झुकना पड़ा।

दक्षिणी अफ्रीका से लौटकर गांधी जी भारत में आए। यहाँ उन दिनों स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए आन्दोलन चल रहा था। गाँधी जी कांग्रेस में शामिल होकर स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने लगे। उनके नेतृत्व में स्वतन्त्रता आन्दोलन खूब बढ़ा। गांधी जी कई बार जेल गए, कई बार उन्होंने अनशन किया। अन्त में गाँधी जी के प्रयत्नों से ही भारत १५ अगस्त, १९४७ को स्वतन्त्र हुआ।

गांधी जी के सिद्धान्त बहुत सरल थे। वे अहिंसा और प्रेम के पुजारी थे। वे कहते थे कि हिन्दू और मुसलमानों को मिलकर रहना चाहिए। गांधी जी ने हमें स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करने की शिक्षा दी।

३० जनवरी, १९४८ को नाथूराम गोडसे नामक व्यक्ति ने गोली मारकर गाँधी जी की हत्या कर दी। यमुना के किनारे गाँधी जी की समाधि बनाई गई है। यह स्थान 'राजघाट' के नाम से प्रसिद्ध है। देश-विदेश के लोग समाधि पर फूल चढ़ाने जाते हैं।

भारत इस महापुरुष का उपकार कभी नहीं भूल सकता।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

मेरा प्रिय नेता : पं० जवाहरलाल नेहरू

भारत में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं, जिसे 'चाचा नेहरू' की याद न सताती हो। वह बच्चों के चाचा थे। वे भारत माँ के सच्चे सपूत थे और संसार के शांतिदूत थे। स्वतन्त्र भारत के प्रथम प्रधान-मन्त्री थे।

पं० जवाहरलाल नेहरू का जन्म १४ नवम्बर, १८८९ को इलाहाबाद में हुआ था। इनके पिता पं० मोतीलाल नेहरू भारत के एक बहुत बड़े वकील थे। इनका पालन-पोषण राजकुमारों की भाँति हुआ था।

नेहरू जी की आरम्भिक शिक्षा अंग्रेज अध्यापकों की देख-रेख में घर पर ही हुई थी। फिर यह उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैण्ड चले गये। इंग्लैण्ड से इन्होंने वकालत पास की। ये भारत में आकर वकालत करने लगे। परन्तु इस कार्य में इनका मन नहीं रम सका।

इनका विवाह श्रीमती कमला से हुआ। श्रीमती इंदिरा गांधी इनकी इकलौती सन्तान हैं।

इनके पिता पक्के देशभक्त थे। इनके घर "आनन्द-भवन" में देश-भक्त नेताओं का आना-जाना लगा रहता था। उन्हीं दिनों यह गाँधी जी के सम्पर्क में आए और तभी से गांधी जी के आन्दोलनों में भाग लेने लगे।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust
देश को स्वतन्त्र कराने के लिये इन्होंने बहुत कष्ट उठाए और अनेक बार जेल गए।

गांधी जी और नेहरू जी के प्रयत्नों से भारत १५ अगस्त, १९४७ को स्वतन्त्र हुआ। पं० जवाहरलाल नेहरू को भारत का प्रथम प्रधान-मन्त्री बनाया गया। नेहरू जी के शासन काल में भारत ने बहुत उन्नति की। ये लगातार सत्राह वर्ष तक हमारे देश के प्रधान-मन्त्री रहे।

२७ मई, १९६४ का दिन भारत के लिए अशुभ दिन था। इसी दिन भारत-माता की आँख का तारा, विश्व का दुलारा और बच्चों का प्यारा चाचा नेहरू हम सब से सदा के लिए बिदा हो गया।

दिल्ली में राजघाट के निकट नेहरू जी की समाधि 'शान्तिवन' के नाम से प्रसिद्ध है। आजकल "तीन-मूर्ति' भवन नेहरू जी का स्मारक बना हुआ है, जहाँ चाचा नेहरू के जीवन की कई वस्तुएँ रखी हुई हैं। जिन्हें देखने के लिये देश-विदेश के लोगों का ताँता लगा रहता है।

नेहरू जी महान् देशभक्त थे। उन्होंने अपना सब कुछ राष्ट्र के लिये दे दिया था। उन्होंने इच्छा प्रकट की थी कि उनकी राख को भारत के खेतों में बिखेरा जाए।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्री वराह गिरि वेंकट गिरि

श्री वराह गिरि वेंकट गिरि हमारे देश के राष्ट्र-पति हैं। उन्होंने २४ अगस्त, १९६९ को राष्ट्रपति पद का कार्यभार सम्भाला था। वे इस देश के चतुर्थ राष्ट्रपति हैं।

श्रीगिरि विनोदी स्वभाव के हैं। उनकी राजनीतिक भविष्यवाणियाँ सत्य सिद्ध होती रही हैं। उनका मनो-बल बहुत ऊँचा है। वे कार्य में सफलता प्राप्ति का रहस्य भी जानते हैं।

श्री गिरि का जन्म १० अगस्त, १८९४ ई० को उड़ीसा के बरहामपुर नामक स्थान पर हुआ। कल्लि-कोटा कालिज से बी० ए० परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् वे बैरिस्ट्री पढ़ने के लिये आयरलैण्ड गए।

स्वतन्त्रता की भावना श्री गिरि के मन में प्रारम्भ से ही थी। इसीलिये उन्होंने आयरलैंड के स्वतन्त्रता-संग्राम में भाग लिया। इस पर उन्हें पढ़ाई छोड़ कर आयरलैंड से स्वदेश लौटना पड़ा।

भारत आकर श्री गिरि गांधी जी के सम्पर्क में आए। गांधी जी ने इस हीरे को परखा और राष्ट्रीय कार्य में जुटा दिया। वे मज़दूरों के नेता बने।

भारत में मज़दूर समस्याओं के हल के लिये उन्होंने एक अखिल भारतीय मज़दूर-संगठन का निर्माण

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust
'किया। इस 'अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन' के वे दो बार अध्यक्ष भी रहे।

सन् १९२७ में जिनेवा में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय श्रम-सम्मेलन में उन्होंने भारत का नेतृत्व किया। सन् १९३१ में गोल-मेज़ (राउंड-टेबल) कांफ्रेंस में उन्होंने मजदूर वर्ग का प्रतिनिधित्व किया।

श्री गिरि मद्रास राज्य के श्रम-मंत्री भी रहे। सन् १९५० में स्वतन्त्र भारत की ओर से वे श्रीलंका में भारत के राजदूत बने। सन् १९५२ में राष्ट्र के प्रथम महानिर्वाचन में वे लोकसभा के सदस्य निर्वाचित हुए। वे उस समय केन्द्रीय श्रम-मंत्री बने।

तत्पश्चात् आप उत्तर प्रदेश, केरल और मैसूर प्रांत के राज्यपाल पद को सुशोभित करते रहे। चतुर्थ महानिर्वाचन के पश्चात् ६ मई, १९६७ को वे उप-राष्ट्रपति निर्वाचित हुए।

तत्कालीन राष्ट्रपति डा० ज़ाकिर हुसैन के अक-स्मात् देहावसान के कारण उन्हें कार्यकारी राष्ट्रपति पद सम्भालना पड़ा। बाद में उन्होंने राष्ट्रपति पद का चुनाव लड़ा। इसमें वे बिजयी हुए। अब वे भारत के राष्ट्रपति हैं। भगवान उन्हें चिरायु करें।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्रीमती इन्दिरा गांधी

श्रीमती इन्दिरा गांधी हमारे देश की प्रधान-मन्त्री हैं। उन्हें सर्वप्रथम सन् १९६६ में प्रधान मन्त्री चुना गया था। अपनी योग्यता के कारण तब से वे निरन्तर इस पद को सम्भाले हुए हैं।

श्रीमती इन्दिरा गांधी पण्डित जवाहर लाल नेहरू की इकलौती पुत्री हैं। इनका बचपन का नाम 'इन्दु' था। इन्होंने कुछ दिन तक रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शान्ति निकेतन में शिक्षा प्राप्त की और उसके बाद उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए विदेश भी गईं। इन्दिरा जी का विवाह श्री फीरोज गांधी से हुआ। इसलिए इनके नाम के साथ 'गांधी' शब्द लगा हुआ है। इन्दिरा जी के दो पुत्र हैं राजीव और संजीव।

देशभक्ति की भावना इन्दिरा जी को माँ के दूध के साथ ही मिल गई थी। यही कारण है कि वे बचपन से ही स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने लगी थीं। कांग्रेस में रहकर आपने बहुत कार्य किया। आप काँग्रेस की अध्यक्षा भी रहीं।

इन्दिरा जी प्रायः अपने पिता श्री जवाहरलाल नेहरू के पास रहा करती थीं। इसलिए उन्हें देश-विदेश की राजनीति का अच्छा ज्ञान हो गया था। यही कारण

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust
है कि नेहरू जी की मृत्यु के बाद जब श्री लालबहादुर शास्त्री प्रधान मन्त्री बने, तब उन्होंने श्रीमती इन्दिरा गांधी को अपने मंत्रिमंडल में शामिल कर लिया। उनकी योग्यता से सभी लोग प्रभावित हुए और शास्त्री जी की मृत्यु के बाद उन्हें प्रधान मन्त्री का पद सौंप दिया गया।

प्रधान मन्त्री बनने पर इन्दिरा जी ने बड़े साहस और सूझ-बूझ से कार्य किया। वे निरन्तर लोकप्रिय होती गईं। जब कांग्रेस के कुछ नेताओं के साथ उनका मतभेद हुआ तो उन्होंने कांग्रेस को छोड़ कर 'नई कांग्रेस' की स्थापना की। देश की जनता ने इन्दिरा जी का समर्थन किया। नई कांग्रेस की सरकार ही देश का शासन चला रही है।

श्रीमती इन्दिरा गांधी देश से गरीबी को हटाना चाहती हैं। इसके लिए उन्होंने समाजवादी नीति को अपनाया है। वे चाहती हैं कि देश के सभी लोगों को रोटी, कपड़ा और मकान की सुविधा प्राप्त होनी चाहिए। देश में समाजवाद लाने के लिए उन्होंने बैंकों का राष्ट्रीयकरण, प्रिवीपर्स की समाप्ति, खाद्यान्न का राष्ट्रीयकरण आदि कार्य किए हैं।

भगवान् हमारी प्रधान मंत्री को चिरायु करें तथा अपने उद्देश्य को पूरा करने की शक्ति प्रदान करे।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

होली

होली हंसी-खुशी का पर्व है। नाच-गा कर हर्ष प्रकट करने का दिन है। एक दूसरे से गले मिलने का दिन है। रंग फेंकने और गुलाल-चन्दन लगाने का त्यौहार है। बैर और लड़ाई-झगड़े को भूलकर प्रेम से मिलने का दिन है।

होली फालगुन मास की पूर्णिमा को मनाई जाती है। अंग्रेजी महीनों के अनुसार प्रायः मार्च में आती है।

होली का सम्बन्ध भक्त प्रह्लाद से है। बालक प्रह्लाद ईश्वर भक्त था और उसका पिता हिरण्य-कश्यप नास्तिक था। पिता ने प्रह्लाद को ईश्वर से विमुख करने के लिए अनेक कष्ट दिए। पर भक्त प्रह्लाद न माना। अन्य में हिरण्यकश्यप ने अपनी बहिन होलिका को प्रह्लाद के साथ आग में बैठने को कहा। होलिका को वरदान प्राप्त था कि उसे अग्नि जला नहीं सकती। इस बार उलटा हुआ। होलिका जल गई। प्रह्लाद बच गया। इस घटना की याद में आज भी होलिका जलाई जाती है।

होली का पर्व दो दिन मनाया जाता है। पहला दिन होलिका दहन का होता है। इस दिन प्रातः किसी स्थान पर लकड़ी का ढेर लगाकर होलिका स्थापित की जाती है। दिन में नारियाँ उसकी पूजा करती

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust
हैं। रात्रि को इसमें आग लगाई जाती है। होलिका जलने पर नाचते-गाते हैं। होली की आग में नई फसल की अनाज की बालों को भूनकर खाते हैं।

दूसरा दिन धुलेंडी का होता है। इस दिन प्रातः से दोपहर तक रंग खेला जाता है। रंग खेलने में बालक जवान, बूढ़े, और नारियाँ सभी भाग लेते हैं। रंगीन पानी फेंकना और मुँह पर गुलाल या चंदन लगाना इस दिन का मुख्य कार्य है। सुबह से ही सड़कों पर होली खेलने वालों की नाचती-गाती टोलियाँ नजर आती हैं।

शाम को होली मेला लगता है। इस मेले में मनोरंजन के बहुत से साधन होते हैं। खाने-पीने की चीजों की भी बहुत-सी दूकानें होती हैं। बच्चे तरह-तरह के खिलौने खरीदते हैं। बड़े शहरों में 'मूर्ख सम्मेलन' किया जाता है, जिसमें हँसी की बातें सुनकर लोगों का मनोरंजन किया जाता है।

कुछ लोग होली के अवसर पर रंग के बदले कीचड़ या गन्दा पानी डालते हैं। कुछ लोग इस दिन भांग, शराब आदि नशीली चीजें पीते हैं। ऐसा करना बुरा है। हमें इन बुराइयों से दूर रहकर प्रेम के साथ होली का त्यौहार मनाना चाहिए।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

दशहरा (विजय दशमी)

दशहरा भारतवर्ष का एक प्रसिद्ध और प्रिय त्यौहार है। इसे सब लोग धूमधाम से मनाते हैं। यह त्यौहार आश्विन महीने के शुक्ल पक्ष में दशमी तिथि के दिन मनाया जाता है। अंग्रेजी महीनों के अनुसार यह प्रायः अक्तूबर में आता है। दशहरे के बारे में प्रसिद्ध है कि इस दिन श्री रामचन्द्र जी ने लंका के राजा रावण के दस सिर काट कर उस पर विजय पाई थी। इस दिन रावण के दस सिर काटे गये थे। इसलिए इसे 'दशहरा' कहते हैं। रामचन्द्र जी ने रावण को जीता था। अतः इसे 'विजय-दशमी' कहते हैं। इसी कथा के आधार पर आज भी इस दिन रावण का कागज का पुतला बनाकर जलाया जाता है।

रामचन्द्र जी के जीवन से हमें शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। हमें उनकी ही भाँति माता-पिता की आज्ञा माननी चाहिए। दुष्टों का दमन करना चाहिये। भाइयों में गहरा प्रेम भाव रखना चाहिए। राम के आदर्शमय जीवन से सम्बन्धित होने के कारण ही यह एक महत्त्वपूर्ण त्यौहार है।

प्राचीन काल में यह पर्व शस्त्र-पूजा दिवस के

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust
सजावट करते हैं। इसे स्वच्छता का त्यौहार कहा जा सकता है।

दीपावली से दो दिन पूर्व धन-तेरस होती है। इस दिन लोग नये बर्तन खरीदना शुभ मानते हैं। अतः बर्तन वालों की दूकानें उस दिन खूब सजी होती हैं।

दीपावली वाले दिन तो चारों ओर सजधज और चहल-पहल होती है। ज़िधर देखो बच्चे-बूढ़े, नर और नारी सब नये-नये कपड़े पहने नजर आते हैं। बाज़ार नई दुल्हिन की तरह सजा हुआ है। हलवाइयों, खीलों और चीनी के खिलौनों की दूकाने खूब सजी होती हैं। पटाखे, मोमबत्ती, बागड़बिल्ले, कंडील, मिट्टी के खिलौनों और तस्वीरों की दूकानों की शोभा भी निराली होती है। खरीदने वालों की भीड़ के मारे सड़क पर चलना कठिन हो जाता है।

रात्रि आई। घरों में दीपक जलाए गए। घरों की मुण्डेरों और आलों पर दीपों की पंक्तियाँ लगने लगीं। कुछ घरों पर बिजली के रंग-बिरंगे बल्ब चमकने लगे इसके बाद पटाखे, हवाइयाँ, अनार छूटने लगे। बच्चे खुश होने लगे। इधर, जगमग हो रही है, उधर लक्ष्मी पूजन शुरू हो गया है। सब खुशी-खुशी लक्ष्मी-गणेश का पूजन करते हैं।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी : एक धार्मिक त्यौहार

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी हिंदुओं का एक धार्मिक त्यौहार है। यह भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन मनाया जाता है।

आज से पाँच हजार वर्ष पूर्व मथुरा का राजा कंस था। वह बड़ा ही दुष्ट था। उसने अपनी बहन देवकी और उसके पति वसुदेव को जेल में डाला हुआ था। श्रीकृष्ण उन्हीं वसुदेव और देवकी की संतान हैं। श्रीकृष्ण का जन्म मथुरा की जेल में रात के १२ बजे हुआ था। इस समय घना अंधकार था, मूसलाधार वर्षा हो रही थी। कृष्ण के पिता वसुदेव ने ऐसी घोर रात्रि में ही कृष्ण को अपने मित्र नन्द के घर गोकुल ग्राम में पहुँचाया था। जहां वे पलकर बड़े हुए। फिर उन्होंने मथुरा आकर अत्याचारी कंस को मारा। अपने माता-पिता देवकी और वसुदेव को जेल से मुक्त किया।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी त्यौहार से १५–१६ दिन पहले से ही मंदिरों में कृष्ण जी के जीवन की झांकियाँ दिखाई जाने लगती हैं। गीता की कथा भी स्थान–

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust
स्थान पर शुरू हो जाती है। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन सभी लोग व्रत रखते हैं। मंदिरों में आरती होती है। हिंदू लोग रात्रि में चन्द्रमा के दर्शन करके व्रत तोड़ते हैं। सारी रात भगवान् का कीर्त्तन होता रहता है। कृष्णजी के गुणों का स्मरण किया जाता है और उनके दिए हुए उपदेश दोहराए जाते हैं।

श्रीकृष्ण हमारे देश के एक महान् पुरुष थे। वस्तुतः वे भगवान् के अवतार थे। उन्होंने संसार में अवतार लेकर अत्याचारों को समाप्त किया। दुर्योधन की सभा में द्रौपदी का चीर बढ़ाकर उसकी लाज रखी। महाभारत के युद्ध में अर्जुन का सारथी बनकर उसे गीता का उपदेश दिया तथा अन्य कितने ही महान् कार्य किए। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर हमें श्रीकृष्ण के गुणों का स्मरण करके उन्हें अपनाने की प्रेरणा मिलती है।

भगवान् कृष्ण का जीवन हमारे लिये आदर्श रहा है। अतः कृष्ण जन्माष्टमी को मनाने का लाभ तभी है, जब हम उनके गुणों का अनुकरण करें और महान् बनने का प्रयत्न करें।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

रक्षा-बन्धन

रक्षा-बन्धन हिंदुओं का एक पवित्र त्यौहार है। यह त्यौहार भाई-बहिन के स्नेह बन्धन को दृढ़ बनाता है। प्राचीन काल में ऋषिलोग इस दिन यज्ञ करते थे तथा वेद-पाठ आरम्भ करते थे। राजा-महाराजाओं को यज्ञ की रक्षा के लिए वचन-बद्ध करते थे। इस दिन नए यज्ञोपवीत पहने जाते हैं। इसे सलोनों, राखी, श्रावणी और व्यास-पूजा भी कहते हैं।

रक्षा-बन्धन श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। यह त्यौहार अत्यन्त प्राचीनकाल से मनाया जाता है। इस दिन राखी बाँध कर नारियां किसी भी पुरुष को भाई बना लेती हैं।

एक बार बहादुरशाह ने चित्तौड़ पर चढ़ाई की तब चित्तौड़ की रानी कर्मवती ने हुमायूँ को राखी भेजकर उसे भाई बनाया था। यह भी प्रसिद्ध है कि सिकन्दर की प्रेमिका ने भारत में आकर राजा पुरु को राखी बाँधी थी और उससे सिकन्दर के प्राणों की रक्षा का वचन लिया था।

राखी के दिन बहिन, भाई की कलाई पर राखी बाँधती है। उसकी दीर्घायु एवं उसके सुखी जीवन के

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

लिये कामना करती है। भाई बहिन की रक्षा का संकल्प लेता हैं। प्रतीक रूप में बहन को कुछ भेंट देता है। इस दिन ब्राह्मण लोग भी अपने यजमानों को राखी बाँधकर दक्षिणा पाते हैं।

अनेक शहरों मे रक्षाबंधन के दिन शाम को मेले लगते हैं। बच्चे-बूढ़े, नर-नारी सभी मेला देखने जाते हैं। बच्चे मेले में जाकर बहुत खुश होते हैं।

रक्षा-बन्धन का त्यौहार भाई-बहिन के पवित्र सम्बन्ध को फिर से सजीव व सरस कर देता है। यदि आज भी हिन्दू युवक राखी बँधवाते समय राखी के गौरव को याद करें तो भारत के बहुत से संकट दूर हो सकते हैं।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

बसन्त का त्यौहार

मानव-जीवन के समान ही प्रकृति में भी परिवर्तन होता रहता है। कभी तेज गर्मी है, कभी वर्षा की फुहारें हैं, तो कभी कड़ाके की सर्दी है। ये प्रकृति के बदलते हुए रूप हैं। इसे ऋतु परिवर्तन कहते हैं।

भारत में छः ऋतुएँ आती जाती हैं। वसन्त ऋतु उनमें सबसे अधिक सुन्दर व मोहक ऋतु है। इसीलिए इसे 'ऋतुराज' कहा गया है। यह बड़ी सुहावनी ऋतु होती है। इस ऋतु में न अधिक सर्दी होती है और न अधिक गर्मी ही होती है।

वसन्त में प्राणीमात्र प्रसन्न है। इस ऋतु में शरीर का बल बढ़ता है। प्राणियों में नए जीवन का संचार होता है।

इस ऋतु में प्रकृति भी प्रसन्न है। पेड़ों और लताओं पर नए पत्ते आते हैं। खेत लहलहा उठते हैं। उपवन फूलों से लद जाते हैं। लगता है भूमि पर हरी-पीली मखमल बिछा दी हो। सरसों वासन्ती रंग के फूलों से लद जाती है। सरोवरों में कमल खिलते हैं। आकाश में पक्षी चहचहाकर ऋतुराज वसन्त का स्वागत करते हैं।

वसन्त पंचमी के दिन वसन्त का त्यौहार मनाया

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

जाता है। इस दिन नृत्य, संगीत और खेलों के कार्यक्रम होते हैं। पतंगे उड़ाई जाती हैं। झूले झूले जाते हैं। कहीं-कहीं कवि-सम्मेलन भी होते हैं। स्कूलों में वार्षिकोत्सव प्रायः इसी दिन मनाए जाते हैं। इस दिन पीले वस्त्र पहनना शुभ माना जाता है। घरों में बसन्ती हलुवा अथवा पीले चावल बनाये जाते हैं।

वसन्त पंचमी सरस्वती-पूजन का दिन भी है। यह शिक्षा आरम्भ करने के लिए शुभ दिन माना जाता है। वसन्त पंचमी का त्यौहार बालक वीर हकीकतराय की याद दिलाता है। इसी दिन उसका बलिदान हुआ था। धर्म की रक्षा के लिए उसने अपने प्राण दिए थे। उसने हिन्दू धर्म छोड़कर मुसलमान बनना स्वीकार नहीं किया था। यही उसका कसूर था। वीर हकीकत की याद में बसन्त पंचमी के दिन कई स्थानों पर मेला लगता है।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

स्वतन्त्रता दिवस : १५ अगस्त

१५ अगस्त, १९४७ का दिन हमारे देश के इतिहास में सर्वाधिक गौरव का दिन है। भारतवर्ष सैंकड़ों वर्षों से पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। उन दिनों हमारे देश में अंग्रेजों का राज्य था। अंग्रेज भारतीय जनता पर तरह-तरह के अत्याचार करते थे। कई वर्षों से भारतवासी स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए प्रयत्न कर रहे थे। अन्त में अगणित वीरों का बलिदान देकर १५ अगस्त, १९४७ को हमने स्वतन्त्रता प्राप्त की। इसलिए यह दिवस 'स्वतन्त्रता-दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

पन्द्रह अगस्त हमारा राष्ट्रीय त्यौहार है। सारे देश में यह त्यौहार बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस दिन सभी सरकारी कार्यालयों, सभी कारखानों, स्कूलों और कॉलेजों में छुट्टी रहती है। दूकानें बन्द रहती हैं। सभी लोग खुशी-खुशी स्वतन्त्रता दिवस मनाते हैं। सभी शहरों में अनेक स्थानों पर स्वतन्त्रता-दिवस का उत्सव मनाया जाता है।

हमारे मोहल्ले में स्वतन्त्रता-दिवस का यह उत्सव नगर-निगम की वाटिका में मनाया जाता है। प्रातः काल से ही नर-नारी बड़ी संख्या में एकत्रित होने शुरू

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust
हो जाते हैं। बैठने को जगह भी नहीं मिलती। फिर भी प्रबन्ध अच्छा होता है। लाउडस्पीकर इत्यादि भी लगा दिए जाते हैं। पहले किसी महान् व्यक्ति के द्वारा ध्वजारोहण किया जाता है। फिर कुछ भाषण आदि होते हैं। कुछ कवि अपनी कविताएँ भी सुनाते हैं। अन्त में 'जन-गण-मन' राष्ट्रीय गान होता है।

स्वतन्त्रता दिवस का उत्सव राष्ट्रीय स्तर पर दिल्ली के लालकिले पर मनाया जाता है। इस दिन भारत के प्रधान-मंत्री लालकिले की प्राचीर पर खड़े होकर राष्ट्रध्वज फहराते तथा भाषण देते हैं। यह नए वर्ष के लिए कुछ कार्य करने के प्रण लेने का दिन होता है। अंत में स्कूलों के हज़ारों बालक-बालिकाओं द्वारा राष्ट्रगान गाया जाता है। इस दिन यहाँ अपार जन-समूह उपस्थित होता है। उपस्थित लोगों में अनेक केन्द्रीय मन्त्री तथा विदेशी राजनयिक भी होते हैं। १५ अगस्त को रात्रि के समय लालकिला, राष्ट्रपति भवन आदि भवनों पर रोशनी भी की जाती है।

हमने बहुत कठिनाइयाँ सहन करने के पश्चात् स्वतंत्रता प्राप्त की है। स्वतंत्रता दिवस हमें अपनी स्वतंत्रता को बनाए रखने की प्रेरणा देता है।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

बाल-दिवस : १४ नवम्बर

१४ नवम्बर का दिन बाल-दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह पण्डित जवाहरलाल नेहरू का जन्म दिन है। नेहरू जो बच्चों को बहुत प्यार करते थे। इसलिए उन्होंने अपना जन्म-दिन बच्चों को दे दिया था। नेहरूजी अपना जन्म दिन बच्चों के बीच मनाया करते थे। इसलिए इसे बाल-दिवस कहा जाने लगा।

बाल-दिवस सभी विद्यालयों में मनाया जाता है। सब विद्यार्थी एक स्थान पर इकट्ठे होकर सभा करते हैं। बाहर से किसी विशेष व्यक्ति को भाषण देने के लिए बुलाया जाता है। अपने विद्यालय के अध्यापक भी भाषण देते हैं। भाषण देने वाले सभी लोग नेहरू जी के जीवन पर प्रकाश डालते हैं और उनके गुणों को अपनाने की शिक्षा देते हैं। बच्चे भी नेहरूजी के बारे में लेख तथा कविताएँ पढ़ते हैं।

बाल-दिवस के अवसर पर कुछ स्थानों पर बाल-मेला लगता है। इस मेले का सारा प्रबन्ध बच्चे ही करते हैं। बच्चे ही बाजार लगाते हैं। मेले में बच्चों के खेल-कूद आदि भी होते हैं।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust.

दिल्ली में बाल-दिवस का उत्सव बड़े रूप में नेशनल स्टेडियम में मनाया जाता है। स्कूलों के बच्चे कई दिन पहले से इस उत्सव में भाग लेने के लिए तय्यारी करते हैं। १४ नवम्बर को स्कूलों से चुने हुए हजारों बच्चे नेशनल स्टेडियम पहुँचते हैं। वहाँ तरह-तरह के कार्यक्रम होते हैं। खेल-कूद और शारीरिक व्यायाम दिखाया जाता है। बच्चों की प्रतियोगिताएँ होती हैं और उन्हें पुरस्कार दिए जाते हैं। जब नेहरू जी जीवित थे, तब वे स्वयं नेशनल स्टेडियम में आकर बच्चों का उत्साह बढ़ाते थे। उनकी मृत्यु के बाद बाल-दिवस के उत्सव में देश के प्रधान मन्त्री आते हैं।

बाल-दिवस का उत्सव हमें अपने प्यारे चाचा नेहरू जी की याद दिलाता है और उनके गुणों को अपनाने की प्रेरणा देता है। हमें इस दिन प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि हम नेहरू जी के आदर्श को अपनाकर देश की सेवा करेंगे।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

गणतन्त्र-दिवस : २६ जनवरी

जिस प्रकार १५ अगस्त को 'स्वतंत्रता दिवस' हमारे देश में बड़ी धूम-धाम व उत्साह से मनाया जाता है, उसी प्रकार २६ जनवरी को गणतंत्र दिवस भी मनाया जाता है। २६ जनवरी, १९५० को हमारे देश का नया संविधान लागू हुआ था और भारत को पूर्ण प्रभुता-सम्पन्न गणराज्य घोषित किया गया था। इसीलिए २६ जनवरी को गणतंत्र दिवस कहते हैं। २६ जनवरी हमारा एक महान् राष्ट्रीय-पर्व है।

भारत के सभी प्रांतों में गणतन्त्र-दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है, किंतु दिल्ली में यह उत्सव बहुत ही सुन्दर रूप में मनाया जाता है। दूर-दूर से लाखों लोग २६ जनवरी का उत्सव देखने के लिए दिल्ली आते हैं। नई दिल्ली में इंडिया गेट के समीप एक विशेष मंच बनाया जाता है। वहाँ पर राष्ट्रपति के अतिरिक्त प्रधान मंत्री, देश-विदेश के गण्यमान्य व्यक्ति और तीनों सेनाओं के अध्यक्ष भी उपस्थित होते हैं। इस मंच पर राष्ट्रपति विशेष साहसिक कार्य करने वालों को पुरस्कार देते हैं तथा

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

सैनिकों की सलामी लेते हैं। गणतन्त्र-दिवस का जुलूस विजय चौक से चलकर इण्डिया गेट पर राष्ट्रपति को सलामी देता हुआ कनॉट प्लेस, अजमेरी गेट और चाँदनी चौक आदि मुख्य स्थानों से होता हुआ लाल-किले पर समाप्त हो जाता है। जुलूस देखने के लिए मार्ग के दोनों ओर विशाल जन-समूह एकत्र होता है।

जुलूस में टैंक, बन्दूक, रायफल, मशीनगन, बम इत्यादि युद्ध के अनेक अस्त्र-शस्त्रों को दिखाया जाता है। सेना के तीनों अंगों के सैनिकों की टुकड़ियाँ भी मार्च करती हुई जुलूस में निकलती हैं। स्कूलों के बच्चे भी मार्च करते हुए राष्ट्रपति को सलामी देते हैं। अन्त में भारत के प्रायः सभी राज्यों द्वारा तैयार की गई झाँकियाँ भी जुलूस में दिखाई जाती हैं। इससे जनता का मनोरंजन भी होता है और ज्ञान भी बढ़ता है।

२६ जनवरी हमें आजादी पर मर मिटने वाले शहीदों की भी याद दिलाती है, जिनके बलिदान व त्याग के फलस्वरूप हमें यह दिन देखने को मिला। इतने महत्त्वपूर्ण दिन को भला किस प्रकार भुलाया जा सकता है?

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

मेरी पहली रेल यात्रा

हमें प्रति वर्ष ग्रीष्म अवकाश होता है। इस वर्ष ग्रीष्म अवकाश में मुझे मेरे चाचा जी ने अपने पास बुलाया था। मेरे चाचा जी आगरा रहते हैं। हमने रेलगाड़ी से आगरा जाने का निश्चय किया। दिल्ली से आगरा के लिए एक विशेष रेलगाड़ी जाती है। मुझे रेलगाड़ी में यात्रा करने की बड़ी इच्छा थी, क्योंकि मैंने अब तक रेल यात्रा नहीं की थी।

रेल-यात्रा में मेरे साथ मेरे पिता जी और मेरी बहन थी। हम सुबह नाश्ता करके स्कूटर द्वारा स्टेशन पहुँचे। बाहर फलों की दूकान से कुछ फल लिए। जब हम प्लेटफार्म पर पहुँचे तो मैंने देखा कि वहाँ बहुत भीड़ थी। चाय, कॉफी, फल, पत्र-पत्रिकाओं आदि की छोटी-छोटी दूकानें सजी हुई थीं। इन छोटी-छोटी दूकानों पर भी बहुत भीड़ थी। अपना-अपना सामान बेचते हुए फेरी वाले शोर कर रहे थे। यात्रियों को किसी न किसी डिब्बे में बिठाने के लिए कुली सिर पर सामान उठाए इधर-उधर घूम रहे थे। कुछ लोग प्लेटफार्म से बाहर आ रहे थे और कुछ लोग गाड़ी पर चढ़ने की जल्दी में थे। हमारी गाड़ी सामने खड़ी थी। हम भी गाड़ी के पास पहुँच गए। सारे डिब्बे ठसाठस भर चुके थे। इतनी भीड़ के कारण रेल में चढ़ना आसान न था। हमें बड़ी कठिनाई से एक डिब्बे में खड़े होने के लिए स्थान मिला।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

गार्ड ने हरी झंडी दिखाई, सीटी बजाई और गाड़ी चल दी। गाड़ी पहले मन्द गति से जा रही थी, परन्तु बाद में तेज चलने लगी। मैं खिड़की से बाहर का दृश्य देखने लगी। बाहर स्टेशन पर यात्री और अन्य रेल कर्मचारी प्लेटफार्म पर घूम रहे थे। मुझे ऐसा मालूम होता था जैसे स्टेशन पीछे की ओर खिसकता जा रहा है। जब गाड़ी स्टेशन से बाहर निकल गई तब दूर-दूर तक फैले हुए खेत और उनके बीच बसे हुए छोटे-छोटे गाँव तेजी से पीछे की ओर भागते दिखाई दे रहे थे। इन दृश्यों को देखकर मुझे बड़ा आनन्द आ रहा था।

बीच में गाड़ी मथुरा स्टेशन पर रुकी। मथुरा बहुत बड़ा स्टेशन है। वहाँ भी प्लेटफार्म पर खूब चहल-पहल थी। पिता जी ने बताया कि मथुरा में तीर्थ-यात्री बहुत आते हैं। इसलिए यहाँ खूब भीड़ रहती है। मथुरा स्टेशन पर हमने कोका-कोला पिया।

गाड़ी लगभग चार घण्टे में आगरा पहुँच गई। पिताजी ने मुझे गाड़ी से उतारा। चाचा जी हमें लेने स्टेशन पर आए हुए थे। मैंने सारी रेल-यात्रा चाचा जी को सुनाई और वे प्रसन्न हुए। इस प्रकार मेरी रेल-यात्रा पूरी हुई। स्टेशन से बाहर आकर हम ताँगे में बैठकर घर पहुँचे।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

पिकनिक का आनन्द

हमारे विद्यालय के छात्र प्रतिवर्ष एक दिन पिकनिक के लिए जाते हैं। पिकनिक मनोरंजन का साधन है। एक दिन तंग मोहल्लों से बाहर खुली हवा में घूम-खेल कर ताजगी आ जाती है। पिकनिक पर जाने से ज्ञान भी बढ़ता है।

इस वर्ष हम अगस्त के प्रथम सप्ताह में पिकनिक के लिए गए। प्रधानाध्यापक महोदय की अनुमति से बुद्ध पार्क जाने का निश्चय किया गया। यह स्थान पिकनिक के लिए बहुत सुन्दर है। बुद्ध पार्क तक जाने और वहाँ से लौटने के लिए बसों का प्रबन्ध किया गया था।

प्रातः आठ बजे हम सब विद्यार्थी एवं अध्यापक अपने विद्यालय में पहुँच गए। विद्यालय से कुछ दूर सड़क पर बसें खड़ी थीं। लगभग सवा आठ बजे हम बसों में बैठ गए। बसें लगभग एक घंटे में बुद्ध पार्क पहुँच गईं।

बुद्ध पार्क का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। हम लोग एक मैदान में बैठ गए। सारा मैदान हरी-हरी घास से ढका हुआ था। चारों ओर हरी-भरी झाड़ियाँ और पेड़ दिखाई दे रहे थे। वर्षा ऋतु के कारण सब जगह

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

हरियाली दिखाई दे रही थी। इस दृश्य को देख कर बच्चे बहुत खुश हो रहे थे।

कुछ देर आराम करने के बाद हमारे अध्यापकों ने हमें खेलने-कूदने की आज्ञा दे दी। सभी बच्चे तरह-तरह के खेलों में मस्त हो गए। खेलते हुए हमें समय के बीतने का पता ही नहीं चला। लगभग एक बज गया। अब हम फिर इकट्टे हुए। सबने मिलकर भोजन किया। सब लोग अपना-अपना खाना साथ लाए थे। कई प्रकार का साग, रोटियाँ, परांठे, पूरियाँ आदि खाने में बहुत आनन्द आया।

खाना खाने के बाद कुछ मनोरंजन का कार्यक्रम चला। बच्चों ने कहानियाँ, चुटकुले, कविताएँ आदि सुनाईं। अरुण गुप्त के गीत सुनकर सब लोग बहुत खुश हुए। हमारे अध्यापकों ने हमें शिक्षा-प्रद कहानियाँ सुनाईं।

कुछ देर हम सब एक साथ बाग में घूमते रहे। वहाँ के प्राकृतिक दृश्यों को देख कर मन प्रसन्न हुआ। मौसम बहुत सुन्दर था। इससे पिकनिक का आनन्द बढ़ गया।

लगभग पाँच बजे हमने लौटने की तय्यारी की। सब लोग इकट्टे होकर बसों तक पहुँचे और घर के लिए चल पड़े। लौटते हुए बसों में भी बच्चे आनन्द मना रहे थे।

छः बजे के लगभग हम विद्यालय में पहुँचे और फिर अपने-अपने घर चले गए।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

मैंने छुट्टियाँ कैसे बिताईं

दिल्ली के स्कूलों में १५ मई से १५ जुलाई तक छुट्टियाँ रहती हैं। आठ-नौ महीने तक लगातार पढ़ाई करने के बाद विद्यार्थियों के लिए छुट्टियाँ जरूरी होती हैं। छुट्टियों में आराम करने और खूब खेलने-कूदने से विद्यार्थियों में चुस्ती आ जाती है। इससे वे अगली कक्षा में उत्साह के साथ पढ़ाई कर सकते हैं।

इस वर्ष जब हमें छुट्टियाँ मिलीं तब हम शिमला गये। वहाँ मेरे पिताजी के एक मित्र रहते हैं। हम उन्हीं के घर पर ठहरे।

दिल्ली से शिमला तक की यात्रा मुझे बहुत अच्छी लगी। जब हम कालका से रेलगाड़ी द्वारा शिमला के लिए चले तब गाड़ी कई बार सुरंगों से गुजरी। उस समय मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। पहाड़ों का प्राकृतिक दृश्य देखकर भी मुझे बहुत आनन्द आया।

शिमला जाने का यह मेरा पहला अवसर था। शिमला में उन दिनों खूब चहल-पहल थी। पिताजी ने बताया कि गर्मियों में वहाँ हमेशा भीड़-भाड़ रहती है।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

हम सुबह-शाम घूमने के लिए जाते थे और दिन के समय घर पर ही कुछ मनोरंजन कर लेते थे। शाम को हम प्रायः माल रोड़ पर घूमने जाते थे। सब लोग प्रायः वहीं आते थे। इसलिए शाम को माल रोड पर खूब भीड़ होती है। मुझे शिमला और उसके आसपास के प्राकृतिक दृश्यों को देखकर बहुत ही आनन्द आया।

शिमला में घूमने का आनन्द लेते हुए भी मुझे अपने स्कूल के काम का ध्यान था। इसीलिए जब दोपहर को मुझे अवसर मिलता, तब मैं स्कूल का काम भी करता रहा। वहाँ तो दोपहर के समय में भी गर्मी नहीं मालूम होती थी।

छुट्टियों में एक अच्छे स्थान की सैर करके मैंने अनुभव किया कि मेरे अन्दर खूब ताजगी आ गई है।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

चिड़ियाघर की सैर

सैर करना सबके लिए जरूरी है। सैर करने से मनोरंजन होता है। इससे थकावट मिट जाती है। शरीर में ताजगी आ जाती है और आगे काम करने में खूब मन लगता है। स्कूलों के विद्यार्थियों को समय-समय पर सैर के लिए अवश्य जाना चाहिए।

दिल्ली में ऐसे कई स्थान हैं, जहाँ की सैर करने पर खूब मनोरंजन होता है। उनमें चिड़ियाघर भी एक स्थान है। चिड़ियाघर की सैर करने से मनोरंजन तो होता ही है, जानवरों के सम्बन्ध में बहुत सी नई बातें जानकर ज्ञान भी बढ़ता है।

पिछले रविवार को हमने चिड़ियाघर की सैर की।

दिल्ली में चिड़ियाघर पुराना किला के समीप विद्यमान है। यह बहुत लम्बे चौड़े क्षेत्र में फैला हुआ है। चिड़ियाघर में अलग-अलग जानवरों के अनुकूल स्थान बनाए गए हैं। इससे जानवर यह अनुभव करते हैं कि वे कहीं बन्धन में नहीं हैं, बल्कि अपने ही घरों में हैं। चिड़ियाघर में प्रकृति के भिन्न-भिन्न दृश्य दिखाई देते हैं।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

चिड़ियाघर के अन्दर जाने के लिए टिकट लेनी पड़ती है। प्रवेश द्वार के साथ ही टिकट-घर है। विद्यार्थियों को कम मूल्य में टिकट मिलती है।

चिड़ियाघर के अन्दर पक्षियों का विभाग सबसे पहले दिखाई देता है। रंग-विरंगे, छोटे-बड़े सभी प्रकार के पक्षी यहाँ है। एक ही पक्षी की अनेक जातियाँ देखकर बहुत आनन्द आता है।

यहाँ घास चरने वाले तथा मांस खाने वाले दोनों प्रकार के बहुत से जानवर हैं। घास चरने वाले जानवरों में हरिण, नील गाय, चँवरगाय आदि है। बच्चे हाथी और गैंडे को देखकर बहुत खुश होते हैं। मांसाहारी जानवरों में शेर, भालू आदि हैं। जिस स्थान पर शेर हैं, उसके चारों ओर खाई बनी हुई है और खाई से थोड़ी दूर पर लोहे का बहुत ऊँचा मजबूत जंगला लगाया गया है।

चिड़ियाघर में बन्दर और वनमानुप भी हैं। वनमानुप की उछल कूद को देखकर तथा उसकी बोली सुनकर बड़ा आनन्द आता है।

सचमुच चिड़ियाघर की सैर बड़ी आनन्द-दायक है।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

रेलवे स्टेशन का दृश्य

जब मैं अपने साथी के साथ सैर को गया तो उसने रेलवे स्टेशन का आँखों देखा हाल मुझे सुनाया। तब से मेरे मन में यह उत्सुकता बढ़ गई कि रेलवे स्टेशन देखना चाहिए। ऐसा सुअवसर मुझे थोड़े ही दिनों बाद मिल गया। जब मैं माता जी के साथ अपनी मौसी जी को लेने के लिए रेलवे स्टेशन पर गया, तभी मुझे स्टेशन का दृश्य देखने का अवसर मिला।

रेलवे स्टेशन के भवन का बाहरी भाग तरह-तरह के सुन्दर साइनबोर्डों से सजा था। स्टेशन के बाहर ताँगे, मोटरें और स्कूटर आदि खड़े थे। किसी पर सवारियाँ बैठ रही थीं, किसी से लोग उतर रहे थे। किसी पर कुली सामान रख रहे थे तो किसी पर से उतार रहे थे।

स्टेशन के सामने का दृश्य बड़ी हलचल और शोरगुल से भरा हुआ था। प्रतीक्षा कक्ष में लोहे और लकड़ी के बहुत से बैंच पड़े थे। उन पर यात्री बैठे हुए थे। कोई-कोई यात्री फर्श पर बिस्तरा लगाकर सोया हुआ भी था।

प्रतीक्षा कक्ष के साथ ही टिकट घर था। वहाँ तीन पंक्तियों में लोग खड़े थे। ये गाड़ी की प्रथम,

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

द्वितीय और तृतीय श्रेणी के टिकट लेने वालों की अलग-अलग पंक्तियाँ थीं।

हम प्लेटफार्म का टिकट लेकर अन्दर पहुँचे। अन्दर का दृश्य तो बहुत ही अद्भुत था। सीढ़ियों पर चढ़कर हम एक पुल पर पहुँच गये। इस पुल पर से दूर-दूर तक बिछी हुई रेल की पटरियों को देखकर तो मैं चकित रह गया।

मैंने देखा कि अचानक ही प्लेटफार्म पर एकदम भाग-दौड़ मच गई। माता जी ने बताया कि गाड़ी आ रही है। देखते ही देखते जोर से सीटी बजाती और छक्-छक् की आवाज करती हुई गाड़ी हमारे सामने रुक गई। लोग गाड़ी से उतरने लगे। माता-जी ने दूर से ही मौसी को देख लिया था। हम लोग उनके पास पहुँचे। उन्होंने मुझे बहुत प्यार किया। कुली से सामान उठवा कर हम स्टेशन से बाहर निकलने के लिए दरवाजे पर आए। वहाँ सफेद कोट-पैंट पहने रेलवे कर्मचारी खड़े थे, जो टिकट लेकर लोगों को बाहर जाने देते थे। यद्यपि निकलने के दो दरवाजे थे, फिर भी हमें बाहर निकलने में काफी देर लगी, क्योंकि लोगों की काफी भीड़ थी। बाहर निकल कर हम ताँगे पर बैठे और घर आ गए।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

एक प्रदर्शनी जो मैंने देखी

दिल्ली में प्राय: प्रतिवर्ष कोई-न-कोई प्रदर्शनी लगती ही रहती है। यहाँ प्रदर्शनियों के लिए मथुरा रोड पर एक बहुत लम्बा चौड़ा मैदान बना हुआ है। इस मैदान का नाम 'प्रगति मैदान' रखा गया है।

'प्रगति मैदान' में ३ नवम्बर ७२ से १७ दिसम्बर ७२ तक एक बहुत बड़ी प्रदर्शनी लगी थी, जो 'एशिया ७२' के नाम से प्रसिद्ध हुई। इस प्रदर्शनी को देखने के लिए दूर-दूर से लोग आए। मैंने भी अपने परिवार के सदस्यों के साथ 'एशिया ७२' प्रदर्शनी देखी।

प्रदर्शनी देखने वालों के लिए कुछ स्थानों से विशेष बसों का प्रबन्ध दिल्ली परिवहन की ओर से किया गया था। हम ऐसी ही एक विशेष बस से प्रदर्शनी देखने गए, इसलिए प्रगति मैदान तक आने-जाने में हमें विशेष असुविधा नहीं हुई।

प्रदर्शनी देखने के लिए बड़ों के लिए एक रुपया और बच्चों के लिए पचास पैसे टिकट थी। हम टिकटें लेकर जब प्रदर्शनी में पहुँचे तब वहाँ की चहल-पहल और सजावट देखकर मैं चकित रह गया। पिताजी ने बताया कि इस प्रदर्शनी में अपने देश के साथ संसार

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

के बहुत से देशों ने भाग लिया है। सभी देशों के मंडप अलग-अलग बने हुए थे।

हम पहले विदेशी मंडपों की ओर गए। एक-एक देश का मंडप बहुत बड़ा बना हुआ था। सभी देशों ने अपने देश की मशीनें आदि अधिक दिखाई थीं। जापान के मंडप में छोटी कार और बच्चों की रेलगाड़ी देखकर मुझे बड़ा आनन्द आया। बर्मी मंडप में सभी दर्शकों को चावल भेंट किए जाते थे।

भारतीय मंडप में विशेष रूप से यह दिखाया गया था कि पिछले २५ वर्षों में हमने उद्योग के क्षेत्र में कितनी उन्नति की है। 'नेहरू और नया भारत' मंडप देखकर मेरे मन में नेहरू जी के प्रति बहुत श्रद्धा पैदा हुई।

कई मंडप देखने के बाद हम काफी थक गए थे। इसलिए पिता जी हमें उस ओर ले गए, जहाँ खाने-पीने की चीजों की दूकानें थीं। वहाँ हमने अनुभव किया कि प्रदर्शनी में खाने-पीने की चीजें बाजार से बहुत अधिक महँगी हैं।

इस प्रदर्शनी को देखकर मुझे आनन्द भी आया और अनेक नई बातों का ज्ञान भी हुआ। हमें ऐसी प्रदर्शनियाँ अवश्य देखनी चाहिएँ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

देश-भक्ति

देश-भक्ति का अर्थ है देश के प्रति भक्ति अर्थात् देश की सेवा करना। हमारा देश हमारी जन्म-भूमि है। इसी की मिट्टी से हमारा शरीर बना है। अपनी मातृ-भूमि की गोद में खेल-खेल कर हम बड़े हुए हैं। हमारा देश हमें अन्न-जल और फूल-फल देता है। इसलिए अपने देश के प्रति भक्ति रखना, अपने देश की सेवा करना हमारा प्रथम कर्त्तव्य है। जो व्यक्ति अपने देश के महत्त्व को नहीं समझता, उसका जीवन व्यर्थ है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है—

जिसको न निज गौरव
तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं, नर-पशु
निरा और मृतक समान है।

सभी लोग देश के लिए कुछ न कुछ कर सकते हैं। हमें सदा ऐसे कार्य करने चाहिएँ जिनसे हमारे देश का सम्मान बढ़े। अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए हमें कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए, जिससे देश को हानि पहुँचे। हमें देश के लिए बड़े से बड़ा त्याग करने के लिए तैयार रहना चाहिए। समय आने

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

पर देश के सम्मान को बचाने के लिए हमें अपने प्राणों को बलिदान तक कर देना चाहिए। यही सच्ची देश भक्ति है।

हम सच्चे देश-भक्त तभी बन सकते हैं, जब हम देश की वस्तुओं से प्यार करें। अपने देश की भाषा को महत्त्व देना, अपने देश की वेष-भूषा पहनना, अपने देश में बनी हुई वस्तुओं का प्रयोग करना आदि देश-भक्ति के अंग हैं।

अपने देश के महापुरुषों का जीवन हमें देश-भक्ति की शिक्षा देता है। महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी आदि वीरों ने देश के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया था। राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी, पण्डित जवाहर लाल नेहरू, सरदार बल्लभ भाई पटेल आदि ने भारत को स्वतन्त्र कराने के लिए बड़े-बड़े कष्ट उठाए थे।

हमें देश-भक्ति का भाव अवश्य अपनाना चाहिए।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

मैं क्या बनना चाहता हूँ

गर्मियों की छुट्टियाँ थीं। एक दिन प्रातःकाल मैं अपने पिता जी के साथ घूमने के लिए जा रहा था। सड़क पर बहुत से लोग दिखाई दे रहे थे। ये सभी लोग घूमने के लिए ही जा रहे थे। एक स्थान पर कुछ लोग इकट्ठे खड़े हुए थे। जब हम वहाँ पर पहुँचे तो हमने देखा कि एक व्यक्ति जमीन पर पड़ा हुआ था। वह 'हाय, हाय' करके कराह रहा था और बड़ी बेचैनी से छटपटा रहा था। पूछने पर वहाँ खड़े हुए एक व्यक्ति ने बताया कि यह व्यक्ति जब घर से चला तब ठीक-ठाक था। चलते-चलते ही अचानक इसके पेट में दर्द होने लगा है। वहाँ खड़े सब लोग उस व्यक्ति से सहानुभूति प्रकट कर रहे थे, परन्तु किसी की समझ में यह नहीं आ रहा था कि उसकी सहायता कैसे की जा सकती है। इतने में दूर से एक व्यक्ति आता हुआ दिखाई दिया। किसी ने कहा, "डॉ० गुप्ता आ गये हैं। वे अवश्य सहायता करेंगे" डॉ० गुप्ता आए, उन्होंने तड़पते हुये व्यक्ति को देखा। उससे दो-चार बातें पूछीं। उसके पेट को दबाकर देखा। इसके बाद उन्होंने एक कागज पर एक दवाई का नाम लिखकर किसी व्यक्ति को दिया। थोड़ी ही

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

देर में दवाई आ गई। उस व्यक्ति ने दवाई खाई। धीरे-धीरे उसकी पीड़ा कम होने लगी। मैंने देखा कि कुछ ही मिनिटों में वह व्यक्ति उठ कर बैठ गया।

सब लोग अपनी अपनी-अपनी राह पर चल दिए। वह व्यक्ति भी अपने साथियों के साथ चला गया। इस दृश्य को देखकर मेरे मन में डाक्टरों के प्रति बहुत अधिक श्रद्धा पैदा हो गई। मैंने अपने पिता जी से कहा कि मैं भी डॉक्टर बनूंगा।

मैं समझता हूँ कि डॉक्टर मनुष्य की जो सेवा कर सकता है, वह सेवा और कोई नहीं कर सकता। अध्यापक, वकील, व्यापारी आदि तो कुछ ही लोगों की भलाई कर सकते हैं, परन्तु डॉक्टर की आवश्यकता सभी लोगों को होती है। अमीर-गरीब बूढ़े-बच्चे, स्त्री-पुरुष सभी की सेवा डाक्टर कर सकता है। डाक्टर का कार्य बहुत महत्त्वपूर्ण है।

मेरी बड़ी इच्छा है कि मैं भी डाक्टर बनूँ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

व्यायाम से लाभ

किसी ने कहा है कि "जिस मनुष्य का स्वास्थ्य ठीक है वह ही इस दुनियाँ के सब सुखों को भोग सकता है।" यह बात पूर्ण रूप से सत्य है। स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए व्यायाम करना बहुत आवश्यक है। व्यायाम का अर्थ है हाथ-पाँव आदि शरीर के अंगों को खुलकर फैलाना और सुविधानुसार उन्हें हरकत देना। इसलिए जिस भाग-दौड़ या उछल-कूद से हमारा अंग खुलता, फैलता और हरकत में आता है, उसे व्यायाम कहते हैं। व्यायाम अनेक प्रकार का होता है। जैसे खेल-कूद, दण्ड-बैठक, दौड़ना, तैरना, भारी पत्थर या बोझा उठाना और आसन करना आदि। इनमें विद्यार्थियों के लिए सबसे अच्छा व्यायाम खेल-कूद है। खेलों में कबड्डी, फुटबाल, हाकी, वालीवाल, रस्सी कूदना, खो-खो, आँख-मिचौनी आदि प्रसिद्ध खेल हैं।

व्यायाम से अनेक लाभ हैं। इससे आलस्य दूर होता है। शरीर फुर्तीला बनता है। अंगों के तेजी से हिलने-डुलने से माँस-पेशियाँ खुलती हैं और अंग मजबूत बनते हैं। उछल-कूद और दौड़-धूप से खून सारे शरीर में दौरा करता है जिससे शरीर में ताजगी व फुर्ती आती है। व्यायाम करने वाला व्यक्ति कभी रोगी

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

नहीं होता। उसका शरीर सदा चुस्त रहता है। काम करने में खूब मन लगता है। वह सदा प्रसन्न रहता है। उसको भोजन भी ठीक तरह पच जाता है। व्यायाम करने वाला व्यक्ति कष्ट में भी नहीं घबराता।

जो लोग व्यायाम नहीं करते उनका स्वास्थ्य खराब रहता है। व्यायाम न करने से मनुष्य आलसी और कमजोर हो जाता है।

हमें नियम से प्रतिदिन सदा खुली हवा में व्यायाम करना चाहिए। भोजन के एकदम पहले या एकदम बाद व्यायाम नहीं करना चाहिए। प्रातःकाल का समय व्यायाम के लिए बहुत अच्छा है। यदि घर के पास ही कोई मैदान या बाग-बगीचा हो तो वहाँ जाकर व्यायाम करना चाहिए। हमें उतना ही व्यायाम करना चाहिए जितना शरीर सहन कर सके।

बहुत से खेलों का प्रबन्ध विद्यालयों में भी होता है। आजकल प्रायः विद्यालयों में ड्रिल और पी. टी. भी सिखाई जाती है, ताकि बच्चे शरीर और दिमाग, दोनों से मजबूत बन सकें।

वास्तव में व्यायाम जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

स्वस्थ रहने का उपाय

स्वास्थ्य मानव-जीवन के सुखों की कुंजी है। स्वस्थ मनुष्य ही सभी कार्यों में सफलता प्राप्त कर सकता है। जो मनुष्य स्वस्थ होगा वही धर्म के कार्य कर सकता है। वही साहस के कार्य कर सकता है। स्वस्थ मनुष्य की बुद्धि तीव्र होती है। यह बात प्रसिद्ध है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क (बुद्धि) रहती है। अतः हमें सदा स्वस्थ रहने के लिए प्रयत्न करना चाहिए।

स्वस्थ रहने के लिये अनेक उपाय हैं। उनमें सबसे पहला उपाय है सफाई। गन्दगी बीमारी की जड़ होती है। अतः स्वस्थ रहने के लिये हमें घर की, शरीर की तथा वस्त्रों की सफाई का ध्यान रखना चाहिये। यदि घर में गन्दगी होगी तो मक्खी, मच्छर आदि पैदा होंगे और बीमारी आएगी। शरीर की सफाई के लिये प्रतिदिन स्नान करना आवश्यक है। दाँतों, कानों, नाखूनों की सफाई पर भी ध्यान देना जरूरी है।

स्वस्थ रहने का दूसरा उपाय है कि हम अपने सभी कार्य निश्चित समय पर करें। हमारे भोजन, सोना, जागना आदि सभी कार्यों के लिये एक निश्चित

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust.
समय होना चाहिये अनियमित कार्य करने से शरीर अवश्य रोगी होता है।

स्वस्थ रहने के लिए एक और महत्त्वपूर्ण उपाय है व्यायाम। व्यायाम करने से शरीर में खून का संचार ठीक होता है। इससे शरीर चुस्त रहता है। प्रतिदिन व्यायाम करने वाला व्यक्ति बीमार नहीं होता। व्यायाम कई प्रकार के होते हैं। प्रातः भ्रमण सबसे सरल और लाभदायक व्यायाम है। स्वस्थ रहने के लिये हमें प्रतिदिन व्यायाम अवश्य करना चाहिए।

मनुष्य का स्वास्थ्य उसके भोजन पर भी निर्भर होता है। इसलिए हमें ऐसा भोजन करना चाहिए जो स्वास्थ्य के लिये लाभदायक हो। खट्टे, मिर्चों वाले तथा भारी पदार्थ नहीं खाने चाहिएँ। ताजा और शुद्ध भोजन स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। बासी और गन्दे पदार्थ खाने से रोग उत्पन्न होते हैं। हमें याद रखना चाहिये—

बासी भोजन गंदा पानी।
बीमारी की यही निशानी॥

मनुष्य के विचारों और उसके आचरण का भी स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है। अतः स्वस्थ रहने के लिये विचारों की पवित्रता तथा आचरण की शुद्धता भी एक उपाय है।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

समाचार-पत्र

मानव एक सामाजिक प्राणी है। इसलिए वह देश-विदेश के समाचार जानने का इच्छुक रहता है। मनुष्य की इसी इच्छा को पूरा करने के लिए समाचार-पत्र छपते हैं।

पहले जमाने में एक स्थान से दूसरे स्थान तक समाचार पहुँचाने के लिए आदमी जाते थे। ये संदेश-वाहक समाचारों को जल्दी पहुँचाने के लिए घोड़े अथवा ऊँट पर बैठकर जाते थे। जब छापाखाने का विकास हुआ तब समाचार-पत्र भी छापने लगे। आजकल सभी भाषाओं में कई-कई समाचार-पत्र छपते हैं।

समाचार-पत्रों में अनेक प्रकार की सामग्री होती है। इनमें हम देश-विदेश के ताजे समाचार पढ़ते हैं। बच्चों के लिए मनोरंजक और शिक्षाप्रद बातें भी इनमें होती हैं। खेलों की समीक्षा, बाजार भाव आदि का ज्ञान भी समाचार पत्रों से हमें होता है।

समाचार-पत्र पढ़ने से कई लाभ हैं। इस का सबसे बड़ा लाभ तो यह है कि इसमें हमें बहुत कम कीमत पर प्रतिदिन विश्व के नये से नये समाचार पढ़ने को मिलते हैं।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

समाचार-पत्रों में अनेक प्रकार की सामग्री छपती है। इसका मुख्य कार्य तो ताजे समाचार छापना है। इसके अतिरिक्त इनमें बच्चों, स्त्रियों आदि सभी वर्गों के लिए विशेष लेख भी छापे जाते हैं। सम्पादक द्वारा अथवा बड़े-बड़े विद्वानों द्वारा लिखे हुए लेखों को पढ़कर पाठकों का ज्ञान बढ़ता है।

व्यापारी समाचार-पत्र से प्रत्येक वस्तु के विभिन्न मण्डियों के भाव जान सकते हैं। इस प्रकार उन्हें व्यापार में बहुत सहायता मिलती है।

व्यापारी अपनी वस्तु का विज्ञापन समाचार-पत्र में छपवाते हैं जिसे लाखों मनुष्य पढ़ते हैं। इससे उस वस्तु का प्रचार बहुत बढ़ जाता है। प्रचार के लिए समाचार-पत्र से अच्छा दूसरा कोई साधन नहीं है।

समाचार-पत्रों में नौकरी के लिए खाली स्थानों के विज्ञापन भी छापे जाते हैं। इससे उन मनुष्यों को अत्यधिक लाभ पहुँचता है, जो नौकरी की तलाश में रहते हैं।

समाचार-पत्र मनुष्य का मित्र है तथा उसे सही रास्ता दिखा सकता है। इसलिए समाचार-पत्रों में असत्य बातें नहीं छापनी चाहिएँ।

हमें समाचार-पत्र अवश्य पढ़ना चाहिए।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

संचार के साधन

'संचार' शब्द का अर्थ है फैलाना। मनुष्य सदा अपने विचारों को दूसरे व्यक्तियों तक पहुँचाना चाहता है। इसके लिए हम कई साधनों का उपयोग करते हैं। आजकल तो संचार के साधनों का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है। यही कारण है कि सभी देशों की सरकारों में संचार-मंत्रालय बनाया जाता है। आजकल हमारे देश के संचार-मन्त्री श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा हैं।

संचार के अनेक साधन हैं। इनमें पुस्तकें, समाचार-पत्र, टेलीफोन, टेलीविजन, रेडियो आदि मुख्य हैं।

पुस्तकों के द्वारा हम दूसरे व्यक्तियों के विचारों को अच्छी तरह जान सकते हैं। प्राचीन काल के विद्वानों के विचार हमें पुस्तकों के द्वारा मिलते हैं।

समाचार-पत्र का मुख्य कार्य समाचारों को फैलाना ही है। इसके द्वारा ताजे से ताजा समाचार हम जान सकते हैं। समाचार-पत्र की विशेषता यही है कि वहां देश-विदेश के समाचारों को जल्दी से जानने का प्रयत्न किया जाता है और जल्दी से जल्दी ही दूसरे लोगों तक पहुँचा दिया जाता है।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

समाचारों तथा सन्देशों को दूर-दूर तक पहुँचाने के लिये तार और टेलीफोन का प्रयोग किया जाता है। तार में संकेतों द्वारा सन्देश भेजा जाता है। टेलीफोन द्वारा तो हम अपने कहीं दूर बैठे हुए मित्र अथवा सम्बन्धो से स्वयं बात कर लेते हैं।

सिनेमा भी संचार का एक महत्त्वपूर्ण साधन है। सिनेमा में सूचना-चित्र दिखाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त सिनेमा की कहानी भी कुछ विशेष सन्देश देती है।

रेडियो संचार का सबसे अधिक लोकप्रिय साधन है। छोटे-बड़े सभी लोगों के पास ट्रांजिस्टर देखे जाते हैं। रेडियो में गाने भी सुनाये जाते हैं और समाचार भी। नेताओं और विद्वानों के भाषण भी रेडियो पर हम सुनते हैं।

संचार का सबसे नया साधन है टेलीविजन। इसमें भी तरह-तरह का कार्यक्रम दिखाया जाता है। स्कूलों के बच्चों को शिक्षा देने के लिये भी टेलीविजन का प्रयोग किया जाता है।

विज्ञान निरन्तर उन्नति कर रहा है। इसलिये संचार के साधनों में भी उन्नति अवश्य होगी।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

यातायात के आधुनिक साधन

यातायात = यात + आयात अर्थात् जाना और आना। हम एक ही गाँव या शहर में रहकर सुखी नहीं रह सकते। कोई वस्तु लेने के लिए तथा कोई कार्य करने के लिए हमें एक स्थान से दूसरे स्थान तक अवश्य आना-जाना पड़ता है। आने-जाने के लिए हम जिन साधनों का उपयोग करते हैं, उन्हें यातायात का साधन कहते हैं।

पुराने जमाने में मनुष्य केवल पैदल चल कर ही यात्रा करता था। बाद में यात्रा के लिए घोड़ा, ऊँट, बैल आदि की सवारी की जाने लगी। पहिये के आविष्कार ने यातयात के साधनों में एक नए युग का प्रारम्भ किया। पहियों के बल चलने वाली अनेक प्रकार की गाड़ियाँ बनने लगीं। पहले-पहल पहिए वाली गाड़ियाँ बैल, ऊँट आदि पशुओं द्वारा खीचीं जाती थीं। धीरे-धीरे इन गाड़ियों का रूप बदलने लगा। लकड़ी के स्थान पर रबड़ के पहिए बने और पशुओं के स्थान पर इंजन के द्वारा गाड़ियाँ खींची जाने लगीं। इस प्रकार हम बैलगाड़ी से बढ़कर रेलगाड़ी तक पहुँच गए।

आधुनिक युग में रेलगाड़ी यातायात का सबसे मुख्य साधन है। एक ही रेलगाड़ी में बैठकर प्रतिदिन

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust
हजारों यात्री एक स्थान से दूसरे स्थान तक आते-जाते हैं।

रेलगाड़ी के अतिरिक्त आजकल यातायात के लिए मोटर-कार, बस, मोटरसाइकिल, स्कूटर आदि अनेक साधनों का उपयोग किया जाता है।

आधुनिक युग में मनुष्य केवल स्थल पर ही यात्रा नहीं करता, बल्कि समुद्र और आकाश में भी यात्रा करता है। जल में यातायात के लिए अनेक प्रकार के जलयान (पानी के जहाज) बनाए गए हैं। ये जहाज यातायात के अतिरिक्त माल ढोने के काम भी आते हैं।

हवाई यातायात के साधनों में सबसे अधिक उन्नति हुई है। राइट बन्धुओं ने इंजन से उड़ने वाला ग्लाइडर तय्यार किया था। इसके बाद हवाई जहाज बना। आजकल अनेक प्रकार के हवाई जहाज आकाश म उड़ते हैं। अब तो हज़ारों किलोमीटर प्रति घंटा की चाल से उड़ने वाले राकेट बन गए हैं। उनका उपयोग मनुष्य ने चन्द्रमा तक पहुँचने के लिए किया है।

आधुनिक युग में यातायात के अनेक साधन हैं। इसलिए एक स्थान से दूसरे स्थान तक आना-जाना बहुत सरल हो गया है।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

प्रार्थना-पत्र एवं पत्र

१. मुख्याध्यापक को प्रार्थना-पत्र
(आवश्यक कार्य के कारण अवकाश के लिए)

सेवा में,

श्री प्रधानाध्यापक महोदय,
नगर-निगम बाल विद्यालय,
जे० जे० कालोनी (वजीरपुर),
दिल्ली-५२

मान्यवर महोदय,

सविनय निवेदन है कि मुझे घर पर आवश्यक कार्य है। अतः मैं आज दिनांक १० मई, १९७३ को विद्यालय आने में असमर्थ हूँ। कृपया मुझे एक दिन का अवकाश देकर अनुगृहीत करें।

आपका आज्ञाकारी शिष्य,
मनोज कपूर
कक्षा पाँचवीं 'अ'

दिनांक १० मई, १९७३.

Devavani,Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

२. प्रधानाध्यापिका को प्रार्थना-पत्र

(अस्वस्थता के कारण अवकाश के लिए)

सेवा में,

श्रीमती मुख्याध्यापिका जी,
नगर-निगम बालिका विद्यालय,
बाजार सीताराम, दिल्ली-६

आदरणीया महोदया,

नम्रतापूर्वक निवेदन है कि कल रात्रि से मुझे बुखार हो रहा है। अतः मैं विद्यालय नहीं आ सकती। कृपया मुझे दिनांक १३ अगस्त, १९७३ तथा १४ अगस्त १९७३ (दो दिन) का अवकाश देने का कष्ट करें।

आपकी आज्ञाकारिणी शिष्या,

दिनांक १३ अगस्त, १९७३ पद्मावती

कक्षा पाँचवीं 'ब'

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

२. मुख्याध्यापक को प्रार्थना-पत्र
(बड़े भाई के विवाह पर अवकाश)

सेवा में,

श्रीमान् प्रधानाचार्य जी,
नगर निगम प्राथमिक विद्यालय,
पहाड़ गंज, नई दिल्ली।

मान्यवर महोदय,

सेवा में विनम्र निवेदन है कि मेरे बड़े भ्राता का शुभ-विवाह ११ जुलाई को होना निश्चित हुआ है। बारात १० जुलाई को अमृतसर जाएगी। आजकल हमारे घर पर संबंधियों का आना भी शुरू हो गया है। मेरा इन दिनों घर में रहना आवश्यक है तथा बारात में जाना भी अनिवार्य है। अतः आपसे करबद्ध प्रार्थना है कि मुझे ९ जुलाई से १३ जुलाई तक, पाँच दिन का अवकाश देने की कृपा करें।

आपकी अति कृपा होगी।

आपका आज्ञाकारी शिष्य,

दिनांक ८ जुलाई, १९७३ — नीरज
कक्षा पाँचवीं 'अ'

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization By eGangotri/Sarayu Trust

४. मुख्याध्यापक को प्रार्थना-पत्र

(विद्यालय से सहायता के लिए)

सेवा में,

श्री मुख्याध्यापक महोदय,
मारवाड़ी प्राथमिक विद्यालय नं० १,
नई सड़क, दिल्ली-६ ।

मान्यवर महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं एक निर्धन छात्र हूँ। मेरे पिताजी कपड़े की एक दूकान पर काम करते हैं। उन्हें केवल १५० रु० मासिक वेतन मिलता है। मेरे दो बड़े भाई भी मारवाड़ी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में पढ़ते हैं। अतः इतने थोड़े वेतन में घर का निर्वाह तथा हमारी पढ़ाई-लिखाई का ठीक प्रबन्ध नहीं हो पाता। मुझे पुस्तकें तो विद्यालय से मिल ही गई हैं, किन्तु नए वर्ष के लिए कपड़े, जूते तथा कापियाँ लेने में कठिनाई हो रही है। अतः मैं नम्रतापूर्वक प्रार्थना करता हूँ कि मुझे विद्यालय की ओर से सहायता देकर अनुगृहीत करें।

आपकी इस कृपा के लिए जीवन-भर आपका कृतज्ञ रहूँगा।

आपका कृपाभिलाषी,

दिनांक ५ मई, १९७३ ।

दयाशंकर गुप्त
कक्षा पाँचवी 'ब'

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

५. पिताजी के नाम पत्र
(परीक्षा-परिणाम की सूचना)

८१-एफ, विनय नगर,
नई दिल्ली,
३० मई, १९७३.

पूज्य पिताजी,

सादर प्रणाम।

आपका पत्र आज ही मिला। पढ़कर घर के समाचार ज्ञात हुए। आप यह जानकर अत्यन्त प्रसन्न होंगे कि मेरा परीक्षा परिणाम ३० अप्रेल को घोषित कर दिया गया तथा मैं कक्षा में प्रथम रहा हूँ। मैंने २५० में से २०९ अंक प्राप्त किए हैं। मैंने अगली कक्षा में प्रवेश ले लिया है तथा अगली कक्षा की पुस्तकें भी खरीद ली हैं। मेरी ओर से कोई चिन्ता न करें। अगले सप्ताह से दो महीने का ग्रीष्मावकाश प्रारम्भ होगा, तब आपके दर्शन करके आशीर्वाद प्राप्त करूँगा।

आदरणीया माता जी को मेरा चरण-स्पर्श व प्रिय नीरू को प्यार।

आपका प्यारा पुत्र,
सुधांशु

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

६. सखी को बधाई-पत्र

(परीक्षा में प्रथम आने पर)

सी-११०, गोल मार्केट,
नई दिल्ली-१.
४ मई, १९७३

स्नेहमयी नीलिमा,

सप्रेम नमस्ते।

तुम्हारा पत्र मिला, पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई कि तुम अपनी कक्षा में सर्वप्रथम आई हो। तुम्हारी मेहनत सफल हो गई। इसके लिए तुम्हें अपनी अध्यापिकाओं का धन्यवाद करना चाहिए तथा उनसे आगे के लिए भी आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिए। पढ़ने में जितना परिश्रम तुम करती रही हो उसका इतना फल तो तुम्हें मिलना ही चाहिये था।

इस शुभ अवसर पर मैं तुम्हें हार्दिक बधाई देती हूँ और भगवान् से प्रार्थना करती हूँ कि आगे भी तुम्हें इसी प्रकार शानदार सफलता प्रदान करे।

तुम्हारी सखी,
अनुपमा

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

७. मित्र का निमन्त्रण-पत्र

(भाई के विवाह पर)

डी-१२९, हौज खास,
नई दिल्ली-२९
३ नवम्बर, १९७३

प्रिय मित्र राकेश,
नमस्कार।

तुम्हें यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि मेरे बड़े भाई साहब का शुभ विवाह ७ नवम्बर, १९७३ को होना निश्चित हुआ है। इस शुभावसर पर तुम भी दिल्ली अवश्य आना। बारात दिल्ली में ही जायेगी। तुम्हारे आने से मेरी प्रसन्नता दुगुनी हो जाएगी। विवाह के बाद मैं तुम्हें दिल्ली के दर्शनीय ऐतिहासिक स्थान भी दिखला दूंगा।

आशा है तुम अवश्य आओगे।

तुम्हारा मित्र,
रमेश

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

८. मुख्याध्यापक को प्रार्थना-पत्र
(प्रमाण-पत्र प्राप्ति के लिए)

सेवा में,

श्रीमान् मुख्याध्यापक महोदय,
नगर निगम प्राथमिक विद्यालय,
लाजपत नगर, नई दिल्ली.

मान्यवर महोदय,

विनम्र निवेदन है कि मैंने इस वर्ष आपके विद्यालय से पांचवीं कक्षा पास की है। मुझे कक्षा ६ में दूसरे विद्यालय में प्रवेश प्राप्त करने के लिये इस विद्यालय के प्रमाण-पत्र की आवश्यकता है।

कृपया मुझे विद्यालय छोड़ने का प्रमाण-पत्र शीघ्र ही देने की कृपा करें, जिससे मुझे प्रवेश लेने में कठिनाई न हो।

धन्यवाद सहित,

१ मई, १९७३ आपका आज्ञाकारी शिष्य,
मकरन्द

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

६. मित्र को निमन्त्रण-पत्र
(जन्म-दिवस के अवसर पर)

ए-६/६, रामाप्रताप बाग,
दिल्ली-७
६ दिसम्बर, १९९३

प्रिय मित्र सतीश,
सप्रेम नमस्ते।

बहुत दिन हो गये तुम से मिले हुए। आशा है तुम स्वस्थ और प्रसन्न होगे।

इस पत्र को प्राप्त करके तुम्हें प्रसन्नता होगी। १२ दिसम्बर को मेरा जन्म-दिन है। गत वर्षों की भाँति इस अवसर पर मेरे पिता जी पार्टी दे रहे हैं। मैं अपनी ओर से तुम्हें निमन्त्रण दे रहा हूँ। और भी मित्र आएँगे। तुम अवश्य आना। पार्टी में खाने-पीने के अतिरिक्त संगीत का कार्यक्रम भी होगा।

मैं आशा करता हूँ कि तुम इस अवसर पर अवश्य आओगे।

तुम्हारा मित्र,
नरेन्द्र बग्गा

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

१०. मित्र को पत्र

(जन्म-दिवस पर बधाई)

५-संतनगर,
करोल बाग, नई दिल्ली-५
१२ दिसम्बर, १९७३

मित्रवर नरेन्द्र जी,

सप्रेम नमस्ते ।

जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में तुम्हारा जलपान का निमंत्रण प्राप्त हुआ । पढ़कर बहुत खुशी हुई । आप मेरी ओर से बधाई स्वीकार करें । परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि तुम्हें सौ वर्ष की आयु प्रदान करे ।

आज तुम्हारा जन्म-दिन है । कितना सौभाग्यशाली दिन है यह । नये-नये कपड़े, सुन्दर-सुन्दर मिठाइयाँ, मित्रों के उपहार और बुजुर्गों के आशीष, सब कुछ जो मिलने हुए ।

एक बात का ख्याल रखना, ये मिठाइयाँ स्वयं ही न खा जाना । तुम जानते ही हो, आज मेरी वार्षिक परीक्षा है । कल तुम्हें मिलूंगा और अपने हिस्से की मिठाई भी खाऊँगा ।

तुम्हारा प्रिय मित्र,
सतीश

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

११. पिता जी को पत्र
(विद्यालय का वर्णन करते हुए)

५५-डी. कमला नगर,
दिल्ली-७
१६ जुलाई, १९७३

पूज्य पिताजी,

सादर चरणस्पर्श ।

आपका पत्र प्राप्त हुआ । आपने मेरे विद्यालय के बारे में जानकारी चाही है । मेरा विद्यालय हर दृष्टि से सुन्दर और श्रेष्ठ विद्यालय है । इसमें पहली कक्षा से पाँचवी कक्षा तक की पढ़ाई के साथ-साथ खेलने का भी सुन्दर प्रबन्ध है । विद्यालय का अपना खेल का मैदान है । विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार खेल खेलते हैं ।

विद्यालय की सबसे अच्छी बात है—अनुशासन और पढ़ाई । स्कूल का अनुशासन बहुत ही अच्छा है ।

छोटी बहिन सुषमा और अनुज अरुण को प्यार । माताजी को चरणस्पर्श ।

आपका प्रिय पुत्र,
विनयकुमार

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

१२. चाचा जी को पत्र
(मेले का वर्णन)

सी-१६, सी. सी. कॉलोनी
दिल्ली-७

१२ अप्रैल, १९७३

आदरणीय चाचा जी,

सादर प्रणाम।

आज ही आपका पत्र मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। मेरी परीक्षा मार्च में समाप्त हो गई थी। इस लिए आज कल मेरा अधिक समय खेलने-कूदने में ही बीतता है।

आपकी आज्ञानुसार मैं एक मेले का वर्णन लिख रहा हूँ, जो मैंने इसी सप्ताह देखा है। यह 'बुढ्ढो माता का मेला' है। यह मेला हमारे घर के पास ही लगता है। जी० टी० रोड पर सी० सी० कॉलोनी के पास ही बुढ्ढो माता का मन्दिर है। वहीं पर होली के सात दिन बाद आने वाले बुधवार को यह मेला लगता है।

मेले के प्रातः काल से ही सड़क के दोनों ओर तरह-तरह की छोटी बड़ी दूकानें लग गई थीं। वहाँ एक बाजार का सा दृश्य दिखाई दे रहा था। मैं अपने

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

मित्रों के साथ लगभग चार बजे सायं मेला देखने गया। चारों ओर भीड़ ही भीड़ दिखाई दे रही थी। खूब शोर-गुल हो रहा था। रंग-बिरंगे कपड़ों से सजे हुए लोग प्रसन्न दिखाई दे रहे थे। खिलौने, गुब्बारे आदि की दूकानों पर विशेष भीड़ थी। खाने-पीने की चीजें भी खूब बिक रही थीं। मेले में औरतों और बच्चों की संख्या अधिक थी। प्रायः सभी औरतें बुढ़ो माता के मन्दिर में प्रसाद चढ़ा रही थीं।

शाम को सात बजे के बाद मेला समाप्त होना शुरू हो गया। धीरे-धीरे भीड़ कम होने लगी। मैं भी अपने मित्रों के साथ घर चला गया।

आदरणीय चाचा जी को सादर प्रणाम तथा प्रिय सुनीला एवं अजय को प्यार।

आपका प्यारा पुत्र,
सुरेन्द्रमोहन

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

१३. पुस्तक-विक्रेता को पत्र

(पुस्तकें भेजने का आदेश)

सेवा में,

व्यवस्थापक महोदय,

सूर्य-प्रकाशन,

नई सड़क, दिल्ली-६

मान्य महोदय,

कृपया निम्नलिखित पुस्तकें वी० पी० पी० से यथाशीघ्र नीचे लिखे पते पर भेजने का कष्ट करें।

१. हमारा पास-पड़ौस
(लेखक—श्री तनसुखराम गुप्त) १० प्रतियाँ

२. सरल निबन्ध (भाग १) १० ,,

३. सरल निबन्ध (भाग २) १० ,,

पुस्तकें अच्छी तरह देख भाल कर भेजें तथा उचित कमीशन अवश्य काटें।

भवदीय,

रमेशकुमार जैन

भेजक पता—

रमेशकुमार जैन,

सी-८३२, बलबीर नगर,

शाहदरा, दिल्ली-३२

Devavani Parishad New Delhi

... बढ़िया किस्म का माल देना ही नहीं बल्कि ...ों को उचित दाम भी देना है।

...ने कहा कि तजुर्बा बताता है कि सहकारी संसाधनों ...कंपनियों में बदलने की जरूरत नहीं है। तजुर्बा यह ...ता है कि सहकारी समिति शुरू करने वाले गरीब ...नकार दिए जाते हैं और ताकतवर लोग इन पर ...मा लेते हैं। अमीर लोग सहकारी समितियों और ... अपने स्वार्थ में शोषण करते हैं।

कंपनी सिपानी आटोमोबाइल लिमिटेड ने जनवरी १९८७ में छोटी जनता कारों के दो माडलों का उत्पादन शुरू किया है। दोनों माडलों की कीमत पचपन हजार रुपए से कम है।

औद्योगिक विकास राज्यमंत्री एम. अरुणाचलम ने बताया कि इस कंपनी का इंग्लैंड की कंपनी रिलायंट मोटर के साथ तकनीकी सहयोग है। उन्होंने कहा कि नीति के रूप में अलग अलग कंपनियों के संबंध में विशिष्ट सूचना जनता के हित में नहीं बताई जाती है।

...से पहाड़ी क्षेत्रों में पर्यावरण पर असर पड़े...

घरेलू गैस की कमी रही: खाना पकाने ... दिल्ली समेत देश के कई हिस्सों में कमी रही ... कारण रहे। मांग में मौसमी बढ़ोत्तरी, औद्यो... और कई बाटलिंग प्लांटों में आपरेशन की दिक्क... लाने ले जाने में दिक्कतें आईं।

पेट्रोलियम मंत्री ब्रह्मदत्त ने लोक सभा में ते... को बताया कि एलपीजी की तीसरे चरण की ... नए बाटलिंग प्लांट लगाए जाने हैं। और एक... किया जाना है। इससे बाटलिंग क्षमता बढ़क... मीट्रिक टन सालाना हो जाएगी।

गैस बाटलिंग प्लांट: लद्दाख क्षेत्र में खान... गैस का बाटलिंग प्लांट लगाने की संभावना ... जांच कर रही है। लोक सभा में ऊर्जा मंत्री ... सवालिया घंटे में लद्दाख के सांसद पी. नामग्या... भरोसा दिया।

बायो गैस प्लांट: राज्यों में लगे बायो गैस ... १५ फीसदी हरदम खराब रहते हैं। लोक सभा में ... बताई गई। पांच स्वतंत्र एजंसियों ने इन प्लांटों ... किया था।

श्री साठे ने अमरसिंह राथवा को बताया कि ... राष्ट्रीय बायो गैस विकास परियोजना के तहत लगे ...

...क लेखा समिति ने सहकारी ...कास निगम को आड़े हाथों लिया

...२४ मार्च (भाषा)। संसद की लोक लेखा ...राज्यों को जरूरत के मुताबिक धन नहीं देने ...सहकारी विकास निगम को आड़े हाथों ...

...ा है कि बिहार, ओड़ीसा, पश्चिम बंगाल ... आदि कम विकसित राज्यों के मुकाबले ...क्षेत्र में विकसित पंजाब हरियाणा और ...से राज्यों को फंड से ज्यादा हिस्सा दिया। जबकि ...की राष्ट्र में भी निगम से कह दिया गया था कि मात्रा में पूंजी निवेश किया है। घाटे की वजह से कई इकाइयां बंद भी हो चुकी हैं।

समिति ने कहा है कि प्रोसेसिंग इकाइयों को मंजूरी देने के लिए निगम के पास अपने तकनीकी कर्मचारी हैं। इसके बावजूद निगम इन इकाइयों के आर्थिक परिणामों का पता लगाने में असफल रहा। समिति ने सिफारिश की है कि सरकार उपचारात्मक उपाय करने के लिए इन इकाइयों के कार्यकरण का गहन अध्ययन करे।

हरियाणा के ८ हजार कर्मचारी स्थाई

आवास में पूंजी निवेश

करोड़ रुपयों में

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri/Sarayu Trust

Devavani Parishad Nagar Delhi

१९८१-८२ में गांवों के ऐसे परिवार जो बढ़कर ६.५६ लाख हो गए हैं। कि जंगल इसलिए कम नहीं हो रहे कि रत के लिए लकड़ियां काटते हैं। जंगलों रण, लकड़ी की शहरी जरूरत है। हा तक देश में हवा का वेग काफी है।

ऊर्जागांव: बीस ऊर्जागाव की योजनाएं १९८७-८८ में पूरी हो जाएंगी। ये गैर पारंपरिक ऊर्जा स्रोत विभाग के साथ में है।

ऊर्जा मंत्री वसंत साठे ने एसएन सिन्हा को बताया कि गैर पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों पर आधारित परियोजनाएं और गांवों में भी शुरू की जाएंगी।

ने हरीश राव को बताया कि राज्य बोर्डों की क्षमता और उत्पादकता में सुधार लाने के लिए निर्देश जारी किए गए हैं। उन्होंने बताया कि ५०० करोड़ रु केंद्रीय परिव्यय वाला एक व्यापक नवीकरण आधुनिकीकरण कार्यक्रम भी शुरू किया गया है। इस ३४ ताप विद्युत केंद्र शामिल हैं।

भाव

मंडियां

(एएनएस)। खुले बाजार ति किलो इस प्रकार रहे। देसी २३० से ३१०, गेहूं ०७, लड़ा १९८ से २००, मैदा सं २२१, चावल बासमती वाला परमल २६५ से ३४०, , काबली चना ४१५ से ६२०, , बाजरा १५० से १७०, ज्वार ी १७० से १९०, जौ १२५ से से ३९० ।

दालें : उड़द ४२० से ५१५, से ५१५, दाल उड़द धुली ६१० ५ से ५३५, दाल मूंग ५५० से धुली ६०० से ६५०, मसूर ३६० सूर ४५० से ५००, मोठ ५१० ४८० से ५३०, दाल अरहर ाल चना ३६० से ३९० ।

प गुड़ २६० से २९५, याः चीनी देसी ५७५ से चीनी मिल डिलिवरी ८ से ५४८ ।

भेड़ों को चराई की सुविधा दी

जयपुर, २४ मार्च (भाषा)। मध्य प्रदेश सरकार ने राजस्थान से लाई जाने वाली भेड़ों को बिना किसी रोकटोक के यहां चराने की सुविधा दे दी है। यह बात मध्य प्रदेश सरकार ने राजस्थान सरकार को भेजे एक पत्र में बताई।

राज्य के भेड़ और ऊन विभाग के निदेशक जीवन सिंह ने बताया कि यहां से लाई जाने वाली भेड़ों के लिए पशुपालकों को मध्य प्रदेश सरकार से इजाजत लेनी होगी। ताकि जंगलों का ठीक से संरक्षण हो सके। निदेशालय ने बताया कि मध्य प्रदेश सरकार ने अपने पत्र में भेड़ों की चराई की इजाजत देने के मसले पर समान नीति अपनाने का इरादा जताया है।

सिक्का (प्रति सैकड़ा) : ५०४२।

सोना (प्रति १० ग्राम) : बिटूर २६२० से २६३०, स्टेंडर्ड सोना (२४ कैरेट) २६४०, स्वर्ण आभूषण (२२ कैरेट) २५५०, गिन्नी २०८० से २११० ।

यदि आप संपत्ति करों के त्वरित भुगतान हेतु छूट का दावा नहीं कर पाए हैं, तो आप दिल्ली नगर निगम की एक ही बार में एकमुश्त भुगतान योजना का लाभ उठा कर छूट प्राप्त करें

हस्ता:
जन सम्पर्क अधिकारी (कर)
दिल्ली नगर निगम
फोन: २९२०७३३

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, Gaytri Sansthan, Jagadguru Tas
Bhavani Parishad New Delhi